www.vinoba.in

भूदान-यज्ञ

भूदान-यज्ञ मूलक ग्रामोद्योग प्रधान अहिंसक क्रान्ति का सन्देशवाहक—साप्ताहिक

सर्व सेवा संघ का मुख पत्र

वर्ष : १५ अंक : ३०

सोमवार २८ अप्रैल, '६९

अन्य पृष्ठों पर

अकाल, राहत और चुनाव	
विकेन्द्रीकरण का विकल्प	
अनावश्यक तूल — सिद्धराज ढड्ढा	३६२
अब भी कुछ कीजिए —सम्पादकीय	३६३
गांधी का गांधीत्व—दादा धर्माधिकारी	३६४
मेरी अध्यक्षता के छह वर्ष... —मनमोहन चौधरी	३६६
आबूरोड से तिरुपति तक	३७२
संथाल परगना में तीन दिन	३७४
आन्दोलन के समाचार	३७५,३७६

आजतक हिन्दुस्तान का भक्ति-मार्ग मूर्ति-ध्यान-परायण ही रहा है। लेकिन अब जमाना आया है कि भक्ति-मार्ग को अपना मुख्य स्वरूप सेवा-परायणता ही बनाना होगा। जब देश के लोग भूखे-नंगे और रोग से पीड़ित हों, तब उनकी सेवा में लग जाना ही भक्ति का सर्वोत्तम कार्यक्रम है। सेवा-परायणता ही भक्ति-मार्ग की आत्मा है। —विनोबा

सम्पादक
राममूर्ति

सर्व सेवा संघ प्रकाशन
राजघाट, वाराणसी-१, उत्तर प्रदेश
फोन : ४२८५

विद्यार्थी छुट्टियों में क्या करें ?

विद्यार्थियों को अपनी सारी छुट्टियाँ ग्रामसेवा मे लगानी चाहिए। इसके लिए उन्हें मामूली रास्तों पर घूमने जाने के बजाय उन गाँवों में जाना चाहिए जो उनकी संस्थाओं के पास हों। वहाँ जाकर उन्हें गाँव के लोगों की हालत का अध्ययन करना चाहिए और उनसे दोस्ती करनी चाहिए। इस आदत से वे देहातवालों के सम्पर्क में आयेंगे। और जब विद्यार्थी सचमुच उनमें जाकर रहेंगे तब पहले के कभी-कभी के सम्पर्क के कारण गाँववाले उन्हें अपना हितैषी समझकर उनका स्वागत करेंगे, न कि अजनबी मानकर उनपर सन्देह करेंगे। लम्बी छुट्टियों में विद्यार्थी देहात में ठहरें, प्रौढ़शिक्षा के वर्ग चलायें, ग्रामवासियों को सफाई के नियम सिखायें और मामूली बीमारियों के बीमारों की दवा-दारू और देखभाल करें। वे उनमें चरखा भी जारी करें और उन्हें अपने हर फालतू समय का उपयोग करना सिखायें। यह काम कर सकने के लिए विद्यार्थियों और शिक्षकों को छुट्टियों के उपयोग के बारे में अपने विचार बदलने होंगे। अकसर विचारहीन शिक्षक छुट्टियों में घर करने के लिए विद्यार्थियों को पढ़ाई का काम दे देते हैं। मेरी राय में यह आदत हर तरह से बुरी है। छुट्टियों का समय ही तो ऐसा होता है, जब विद्यार्थियों का मन पढ़ाई के रोजमर्रा के कामकाज से मुक्त रहना चाहिए और स्वावलम्बन तथा मौलिक विकास के लिए स्वतंत्र रहना चाहिए। मैंने जिस ग्रामसेवा का जिक्र किया है, वह मनोरंजन का और बोझ न मालूम होनेवाली शिक्षा का उत्तम रूप है। स्पष्ट ही यह सेवा, पढ़ाई पूरी करने के बाद केवल ग्रामसेवा के काम में लग जाने की सबसे अच्छी तैयारी है।[1]

अपनी योग्यताओं को रुपया-आना-पाई में भुनाने के बजाय देश की सेवा में अर्पित करो। यदि तुम डाक्टर हो तो देश में इतनी बीमारी है कि उसे दूर करने में तुम्हारी सारी डाक्टरी-विद्या काम आ सकती है। यदि तुम वकील हो तो देश में लड़ाई-झगड़ों की कमी नहीं है। उन्हें बढ़ाने के बजाय तुम लोगों में आपसी समझौता कराओ और इस तरह विनाशक मुकदमेबाजी को दूर करके लोगों की सेवा करो। यदि तुम इंजीनियर हो तो अपने देशवासियों की आवश्यकताओं के अनुरूप आदर्श घरों का निर्माण करो। ये घर उनके साधनों की सीमा के अन्दर होने चाहिए और फिर भी शुद्ध हवा और प्रकाश से भरपूर तथा स्वास्थ्यप्रद होने चाहिए। तुमने जो भी सीखा है उसमें ऐसा कुछ नहीं है, जिसका देश की सेवा के काम में सदुपयोग न हो सके।[2]

मो. क. गांधी

(१) 'यंग इंडिया' २६-१२-'२९, (२) 'यंग इंडिया' ५-११-'३१

www.vinoba.in

अकाल, राहत और चुनाव

गुजरात के बनासकांठा क्षेत्र में ४ मई को लोकसभा के उपचुनाव के लिए मतदान होनेवाला है। इस चुनाव में तीन उम्मीदवार हैं जिनमें कांग्रेस की ओर से भूतपूर्व केन्द्रीय रेलमंत्री श्री एस० के० पाटिल, स्वतंत्रपार्टी के श्री मनुभाई अमरसी और निर्दलीय उम्मीदवार श्री हिम्मत सिंह हैं। 'टाइम्स आफ इण्डिया' में प्रकाशित एक समाचार के अनुसार इस चुनाव-क्षेत्र के करीब साढ़े बारह सौ गाँवों के लोगों के लिए यह उपचुनाव एक वरदान साबित हो रहा है। इस क्षेत्र में इस वर्ष अकाल है लेकिन उक्त पत्र के संवाददाता के अनुसार "अकाल के पिछले तीन महीनों में लोगों को इतनी फुर्ती से और समाधानकारक राहत कभी नहीं मिली, जितनी पिछले एक सप्ताह में मिली।" इस बीच इन संकटग्रस्त गाँवों से करीब ५० हजार लोग काम और आजीविका की तलाश में दूसरे क्षेत्रों में चले गये।

आज जनतंत्र में जनता के हित या कल्याण के काम उनके गुणदोषों के आधार पर पार नहीं पड़ते बल्कि तभी होते हैं जब या तो इस तरह के मतदान के प्रसंग आते हैं और राजनैतिक नेताओं को जनता की गरज होती है, या जब जनता की ओर से पैरवी करनेवाला कोई शक्तिशाली प्रतिनिधि होता है। आज की राजनीति के संदर्भ में शक्तिशाली प्रतिनिधि का मतलब उससे है जो या तो स्वयं मंत्री हो या जो राजनैतिक 'ब्लैक मेल' करके, अर्थात् डरा-धमकाकर, काम निकालने की हिकमत रखता हो। जाहिर है कि ऐसी परिस्थिति में जो व्यक्ति या समूह इस दृष्टि से ताकतवर होता है वह ज्यादा मदद अपनी ओर खींच लेता है तथा और ज्यादा ताकतवर बन जाता है। यही कारण है कि हमारे देश में नाम के लिए शासन जनतंत्रीय होते हुए भी पिछले बीस बरसों में अमीरों और गरीबों के बीच की खाई घटने के बजाय बढ़ी है। जनतंत्र का अर्थ होना तो यह चाहिए था कि जो सबसे कमजोर हो उसको सबसे पहले राहत मिले, लेकिन लोगों की यह आशा सपने जैसी हो गयी है। इस आशा को पूरी होने का अब एक ही उपाय है कि नीचे से गाँव-गाँव के लोग संगठित हों और अभिक्रम अपने हाथ में लें।

विकेन्द्रीकरण का विकल्प ?

लोकसभा में कांग्रेस पार्टी के सदस्य श्री चन्द्रशेखर ने, जिन्होंने पिछले दिनों वित्तमंत्री मोरारजी देसाई की नीतियों के खिलाफ आवाज उठाकर प्रसिद्धि पायी है, अभी हाल में चण्डीगढ़ की एक सभा में कहा कि उनके विरोध का मुख्य मुद्दा श्री मोरारजी देसाई पर लगाये गये अभियोगों का नहीं है बल्कि देश में आर्थिक शक्ति के केन्द्रीकरण के खिलाफ लड़ाई का है।

आर्थिक शक्ति के केन्द्रीकरण के खिलाफ उठायी गई आवाज का हम हार्दिक स्वागत और समर्थन करते हैं। लेकिन श्री चन्द्रशेखर के पास इसका जो विकल्प है, यानी आर्थिक शक्ति व्यक्तिगत क्षेत्र में पूँजीपतियों के हाथ में न रखकर राज्य के हाथ में आ जाय, इससे आर्थिक शक्ति का केन्द्रीकरण कैसे मिटेगा यह हमारी समझ में नहीं आता। पूँजीपतियों के बजाय राज्य के हाथ में आर्थिक सत्ता आ गयी तो उससे उसके केन्द्रीकरण में, या जनजीवन पर होनेवाले उस केन्द्रीकरण के बुरे असर में, क्या फर्क पड़नेवाला है ? बल्कि राज्य के हाथ में आर्थिक सत्ता आने से तो उलटे सत्ता का केन्द्रीकरण बढ़ने वाला है, क्योंकि तब राजनैतिक और आर्थिक दोनों प्रकार की ताकत राज्य के हाथ में केन्द्रित हो जायेगी जैसी कि आज होती चली जा रही है। साफ-साफ कहने के लिए हम माफी चाहते हैं, लेकिन श्री चन्द्रशेखर जैसे लोगों को, जो राज्य के हाथ में सारा नियंत्रण केन्द्रित करना चाहते हैं, वास्तव में इस बात से ज्यादा मतलब नहीं है कि आर्थिक सत्ता का विकेन्द्रीकरण हो और वह सचमुच लोगों के हाथ में आ जाय, बल्कि इस बात की ज्यादा चिन्ता है कि यह सत्ता पूँजीपतियों के बजाय सरकार के जरिये उनके जैसे लोगों के हाथ में आ जाय।

हम नहीं चाहते कि आर्थिक सत्ता टाटा, बिड़ला जैसे उद्योगपतियों के हाथ में केन्द्रित हो, लेकिन हम यह भी नहीं चाहते कि वह सरकार के हाथ में केन्द्रित हो। क्योंकि यह सही है कि सत्ता के केन्द्रीकरण से जनता का निर्बलन और शोषण बढ़ता है। हम चाहते हैं कि शक्ति सीधे जनता के हाथ में आये।

अनावश्यक तूल

पुरी मठ के शंकराचार्यजी ने हिन्दू धर्म में छुआछूत के स्थान के बारे में जो कुछ कहा है वह निश्चय ही एक प्रतिगामी विचार है। धर्म-शास्त्रों में क्या लिखा है क्या नहीं, और 'धर्म-शास्त्र' भी किसे कहा जाय किसे नहीं, यह अलग चीज है, लेकिन मनुष्य-मनुष्य के बीच ऊँच-नीच की दीवार खड़ी करने का कोई भी विचार निश्चय ही आज के युग में मान्य नहीं होगा, चाहे उसके लिए प्राचीन व्यवस्थाओं की कितनी भी दुहाई दी जाय। पर साथ ही हम देश के वयोवृद्ध नेता श्री राजगोपालाचारी की इस बात से सहमत हैं कि श्री शंकराचार्य के कथन को अनावश्यक तूल दिया जा रहा है। कभी-कभी ऐसी बातों की उपेक्षा करना उनका ज्यादा कारगर विरोध साबित होता है। इसके अलावा, श्री शंकराचार्य के कथन को लेकर उनकी व्यक्तिगत आलोचना तो और भी गलत है। भारतीय जनसंघ के अध्यक्ष श्री अटल बिहारी वाजपेई ने ठीक ही कहा है कि वे भी श्री शंकराचार्य की राय से सहमत नहीं हैं, "पर अपनी राय व्यक्त करने के उनके अधिकार का हमें आदर करना चाहिए।" मतभिन्नता, और भिन्न मत को प्रगट करने का अधिकार, जनतंत्र की आत्मा है यह हमें नहीं भूलना चाहिए।

पठनीय मननीय

नयी तालीम

शैक्षिक क्रान्ति की अग्रदूत मासिकी

वार्षिक मूल्य : ६ रु०

सर्व सेवा संघ प्रकाशन, वाराणसी-१

www.vinoba.in

अब भी कुछ कीजिए

'भूल हुई। कांग्रेस ने प्रशासन और शिक्षण ज्यों-का त्यों बनाये रखा। अगर बदला होता तो आज देश की शकल दूसरी होती।'

ये शब्द किसी आलोचक के नहीं हैं, स्वयं प्रधानमंत्री के हैं जिन्हें उन्होंने अभी कुछ दिन हुए रायबरेली उत्तर प्रदेश की एक सभा में दुख के साथ कहे। जरूर दुख के साथ उनके मन में पश्चाताप भी रहा होगा, और कुछ करने की बात भी रही होगी। यही दुख तो देश के करोड़ों लोगों को भी है कि देश से अंग्रेजी राज गया लेकिन रह गयी अंग्रेजी, और दूनी हो गयी अंग्रेजियत। न बदली हुकूमत, न बदला शिक्षण; न बदली पुलिस, और न बदला न्याय। अगर कुछ बदला तो बदली राजनीति— इतनी बदल गयी कि उसने लोगों के दिलों से देश को निकालकर दल और जाति, और न जाने क्या-क्या, घुसा दिया। स्वतंत्रता आयी लेकिन गरीब के लिए रोटी न लायी, बेकार के लिए काम न लायी, स्त्री के लिए इज्जत न लायी, जवान के लिए आशा न लायी, आपस की मुहब्बत न लायी। लोग बार-बार पूछते हैं कि स्वतंत्रता खुद आयी तो स्वराज्य को कहाँ छोड़ आयी?

ऐसा क्यों हुआ, इसको लेकर बाईस साल के पिछले इतिहास को टटोलने से क्या मिलेगा? आज इतने वर्षों बाद हम बीती बातों को बटोरकर क्या करेंगे? भूलें बहुत हुईं लेकिन उन्हें गिनाने से क्या होगा? हाँ, अगर स्वीकृति के साथ-साथ यह संकल्प भी हो कि जो होना था हो गया, अब आगे की सुधि लेनी चाहिए, तो जरूर अब भी काम बन सकता है। बिगड़ा तो बहुत कुछ है, फिर भी जो बचा है उससे नयी नींव डाली जा सकती है।

नेहरूजी ने अभी अपनी जिन्दगी के आखिरी दौर में एक बार पार्लियामेंट में कहा था कि भूल हुई कि खेती पर जोर नहीं दिया गया, और यह कहते हुए उन्होंने यह भी कहा था कि बहुत मुमकिन है इस मुल्क के सवालों का जवाब गांधीजी के ही बताये हुए रास्ते पर मिले।

नेहरू ने चलते-चलते भूल देखी लेकिन उसका सुधार नहीं हो सका। हम कैसे मानें कि इन्दिराजी आज जो भूलें देख रही हैं उनका सुधार हो जायगा? कौन करेगा, कब करेगा, कैसे करेगा? या, इसी तरह भूलों की सूची बनती जायगी, नयी-नयी भूलें जुड़ती जायँगी, और देश जहाँ था वहाँ बना रहेगा?

एक बात जाहिर है कि देश का संकट अब किसी एक दल के वश का नहीं रह गया है। यह बात इतनी साफ है कि यह सोचना ही बेकार है कि कोई ऐसा भी होगा जो इसे नहीं मानता होगा। अभी कुछ दिन हुए श्री कामराज ने कहा, और अब स्वयं प्रधान मंत्रीजी ने प्रशासन और शिक्षण की बात कहते हुए सभी दलों के नेताओं से अपील की है कि सब मिलकर समस्याओं का समाधान ढूँढें।

इसमें शक नहीं कि पहली जिम्मेदारी राजनैतिक नेताओं पर है। उनमें भी सबसे बड़ी जिम्मेदारी कांग्रेस पर है क्योंकि अब भी वह सबसे बड़ी पार्टी है। पिछले बाईस वर्षों से दिल्ली में उसका अखंड राज है। इसलिए जो भी भूलें हुई हैं उनमें उसका हाथ सबसे ज्यादा है। अंग्रेजी राज के बाद जैसे उसने झंडा बदला उसी तरह वह प्रशासन बदल सकती थी, शिक्षण बदल सकती थी, और इस पंचवर्षीय योजना की जगह दूसरी योजना बना सकती थी। कांग्रेस ने ऐसा क्यों नहीं किया? उसके पास गांधीजी की वसीयत थी, और नेहरू का नेतृत्व था। दो-चार नहीं, पूरे सत्रह वर्षों तक नेहरूजी प्रधानमंत्री थे, देश के नेता थे, करोड़ों-करोड़ लोगों के लिए सब कुछ थे। इसलिए पहल कांग्रेस को ही करनी पड़ेगी—संकोच छोड़कर, साहस के साथ।

प्रधानमंत्रीजी ने अपने भाषण में बात बहुत बड़ी कही है। क्रान्ति की बात कही है। लेकिन क्या उनको भरोसा है कि यह काम राजनीति से होगा? जो प्रशासन चल रहा है उससे होगा? क्या बाईस वर्षों का अनुभव यह नहीं बता रहा है कि जनता को अलग रखकर सरकारी अफसरों और दफ्तरों के द्वारा सुधार की जो कोशिश की गयी वह भूल थी, और सब भूलों में शायद सबसे बड़ी और बुनियादी भूल थी? किसी देश में क्रान्ति की शक्ति जनता के सिवाय और कहीं नहीं होती। गांधीजी ने यह शक्ति पैदा की थी, हमने योजनापूर्वक उसे खो दिया।

देश एक है, जनता भी एक है, लेकिन अफसोस है कि नेता एक नहीं रह गये हैं। वे अपने-अपने दल की आँखों से देखते हैं, और दल के ही कानों से सुनते हैं। उनके मन में सरकार की सत्ता की ज्यादा कीमत है, जनता की शक्ति की कम। किन्तु क्रान्ति का स्रोत जनता में होता है, न कि सरकार में। यह बात नेताओं को कौन समझायेगा?

गांधीजी ने जीवन भर—जीवन के अंतिम दिन तक—यही कोशिश की थी कि जनता की शक्ति बने। वह अपने पैरों पर खड़ी हो। सरकार रहे, लेकिन जनता की पूरक होकर रहे। गांधीजी की यह बात नहीं मानी गयी। सत्रह वर्षों से विनोबाजी ग्रामदान के द्वारा गाँव-गाँव की निराश और कुंठित लोकशक्ति को जगाने का काम कर रहे हैं। लेकिन उसकी ओर भी नेताओं का ध्यान कहाँ है? तो, क्या जिस तरह गांधीजी की बात अनसुनी कर दी गयी, उसी तरह विनोबा का यह कौतुक भी अनदेखा ही रह जायेगा? गांधी हों या विनोबा, देश को किन्हीं व्यक्तियों से बँधने की जरूरत नहीं है। देश बड़े-से-बड़े व्यक्ति से बड़ा है। लेकिन देश की परिस्थिति की उपेक्षा अपराध है।

हमारे देश में क्रान्ति का क्या अर्थ है? क्या यह नहीं कि देश की राजनैतिक व्यवस्था, विकास की पद्धति और शिक्षानीति की बुनियादें बदलने का एक साथ प्रयत्न हो? इतने वर्षों के बाद अब प्रयत्न एकांगी नहीं होने चाहिए, और न केवल पेबन्द लगाकर→

www.vinoba.in

गांधी का गांधीत्व

०दादा धर्माधिकारी

गांधी ने कहा था कि केवल सन्दर्भ और परिस्थिति बदलना काफी नहीं है। परिस्थिति बदलनेवालों का दिल भी बदला हुआ होना चाहिए। जिसका अपना दिल न बदला हो वह कैसे दूसरों का दिल बदल सकता है? यह एक नया आयाम, नया पैमाना गांधी लेकर आया, जिसकी तरफ दकियानूसी क्रान्तिकारियों ने ध्यान नहीं दिया। कुछ रूस की तरफ देखते हैं, कुछ चीन की तरफ। इससे आगे वे बढ़ना ही नहीं चाहते। देखने की मुख्य बात यह है कि क्रान्ति किसके लिए होगी? और, किसके द्वारा होगी? सत्ता, सम्पत्ति और शस्त्रधारी अगर क्रान्ति करेगा तो वह उसे खुद हड़प लेगा। सत्तावाला खुद राजा बनेगा, चाहे पार्टी हो, चाहे डिक्टेटर। सम्पत्तिधारी अगर क्रान्ति करेगा तो वह क्रान्ति को खरीद लेगा। आज वह पार्लियामेंट को खरीदता है, कल क्रान्ति को खरीद लेगा। शस्त्रधारी अगर क्रान्ति करेगा तो जवान-ही-जवान रह जायँगे, किसान कोई नहीं रहेगा—जैसा चीन में हुआ।

फिर क्रान्ति कौन करेगा?

हम अपने देश की राजनैतिक पार्टियों के झण्डों की तरफ देखें तो कांग्रेस के झण्डे पर चरखा, समाजवादियों के झण्डे पर एक पहिया और एक हल, साम्यवादियों के झण्डे पर हँसिया हथौड़ा है। लोग कहते हैं कि इन मार्क्सवादी कम्युनिस्टों को जोर जबरदस्ती पर विश्वास है तो झण्डे पर पिस्तौल क्यों नहीं रखते? झण्डे पर रिवालवर क्यों नहीं रखते? कुछ नहीं तो, रामचन्द्रजी का धनुष रख लें, हनुमानजी की गदा रख लें, राणा प्रताप की तलवार रख लें, यह हँसिया-हथौड़ा आखिर क्यों रखा है? इसमें एक संकेत है कि शक्ति उन लोगों के हाथ में होगी, जिन लोगों के पास उत्पादन के साधन हों।

अब मुझे बतलाइए

हँसिया और हथौड़े को तलवार की शरण में जाना पड़ा तो क्रान्ति तलवार की होगी, हँसिया-हथौड़े की नहीं। हँसिए से गला भी काटा जा सकता है, हथौड़ा सर पर भी मारा जा सकता है, लेकिन यह उनका सही उपयोग नहीं है। औजार वह है, जिसका सही उपयोग जीवन देना है और हथियार वह है, जिसका काम जान लेना है। इसलिए हथियार की क्रान्ति क्रान्ति नहीं है।

एक तरफ पुलिस का आतंक है, दूसरी तरफ भीड़ का आतंक है; नागरिक आतंकित हैं। आतंकित नागरिक आजादी का उपभोग नहीं कर सकते हैं। लोहार जिस तिजोरी को बनाता है वही तिजोरी उसे खरीद सकती है। जो बेवकूफ तलवार बनाता है, तलवार से वह काँपता रहता है। उसे समझाइए कि शोषण के और अपने ऊपर अत्याचार के सारे साधन तू बनाता है, वह तेरी समझ में क्यों नहीं आता, वह तुझे नहीं बनाना चाहिए। यह होश दिलाने की जरूरत है। यह होश वही दिलायेगा जो उसके पास वोट माँगने नहीं जाता। जिसको वोट झुटाने हैं वह किसी को समझाने की फिक्र में क्यों पड़ेगा? वह तो यह देखेगा कि गाँव का दमदार आदमी साथ ले जाओ तो जल्दी मिल जायेगा। जो वोट माँगता है उसके समझाने का कोई परिणाम नहीं है। सिनेमा देखने गये तो वहाँ पर शरीर की हिफाजत के लिए बड़े मोटे-मोटे आकर्षक अक्षरों में वाक्य देखे। खुशी हुई कि अब सिनेमा में भी स्वास्थ्य के पाठ पढ़ाये जाने लगे। अन्त में आया कि हमारा च्यवनप्राश खरीदिए, तो सारा स्वास्थ्य का पाठ उस च्यवनप्राश खरीदने के लिए था। इसी तरह वोट माँगनेवाले समझायेंगे और अन्त में कह देंगे कि वोट हमको दीजिए। इस प्रकार की 'पालिटिक्स' की फिक्र गांधी को नहीं थी। आजादी के बाद इसीलिए उसने कहा कि कांग्रेस अब लोकसेवक समाज में परिवर्तित हो जाय।

जरूरत है लोकमत के जागरण की

जिनको वोट नहीं चाहिए, उनका यह काम है कि लोकमत का जागरण करें। इस देश में भूख की समस्या है, और भीख की भी समस्या है। भूख का उत्तर कारखानों से नहीं दिया जा सकता। कारखानों में, चाहे लोहा हो या सोना ही सोना होने लगे, भूख का निवारण नहीं हो सकता। चूँकि भूख है इसलिए भीख भी है, भूखा या तो चोर बनेगा या भिखारी बनेगा। गांधी का यह कहना था कि मेहरबानी करके लोगों को भीख मत सिखाइए। अन्न कहाँ से आये? आज हम कहते हैं, अमेरिका से। अमेरिका क्यों दे? क्या हमारे पूर्वजों ने धरोहर रख छोड़ी है? हमारा देश ब्राह्मणों का है, लगता है कि उसके यहाँ श्राद्ध होगा। इस मनोवृत्ति को गांधी बदलना चाहता था। इसका नाम उसने

→संतोष मानना चाहिए। जिन हजारों गाँवों ने ग्रामदान के द्वारा एक नये संकल्प की घोषणा की है उन्हें अपने ढंग से स्वायत्त जीवन विकसित करने का पूरा मौका मिलना चाहिए। इसके लिए अगर सरकार को शक्तियों और जिम्मेदारियों का दायरा कम भी करना पड़े तो उसकी तैयारी नेताओं को रखनी चाहिए।

प्रधानमंत्रीजी ने भूलें तो मान लीं लेकिन मालूम होना चाहिए कि सुधार के लिए वह क्या सोच रही हैं? क्या पहले कदम के रूप में इन्दिरा-जयप्रकाश-विनोबा की प्रत्यक्ष चर्चा जरूरी नहीं माननी चाहिए? यह चर्चा हो जाय तो सरकारी और गैर-सरकारी 'बड़ों' में मुख्य प्रश्नों पर 'कन्सेन्सस' की तलाश होनी चाहिए। जहाँ तक गाँवों का सम्बन्ध है, ग्रामदान के सिवाय दूसरा कोई आन्दोलन नहीं है जिसे ग्रामीण जनता की इतनी व्यापक सम्मति मिली हो। ग्रामदान ग्रामीण जनता की क्रान्ति के लिए 'वोट' है। देश के एक लाख गाँव क्रान्ति के लिए तैयार हैं। देर है बड़े लोगों के तैयार होने की।

हमारा देश संकट में है। संकट की घड़ी साहस की घड़ी होती है। एक बार, प्रधानमंत्रीजी दल के ऊपर उठकर देश के सामने अपना दिल रख दें तो देखेंगी कि देश के हृदय में अब भी गांधी का स्पर्श है, और उस स्पर्श में क्रान्ति की शक्ति है।०

www.vinoba.in

स्वदेशी रखा था। भूख का निवारण खेती से होगा इसीलिए क्रान्ति का आरम्भ अन्न के उत्पादन से होगा। अन्न का उत्पादन क्रान्ति की विभूति है।

बड़े आश्चर्य की बात है बिड़ला, टाटा, डालमिया कहते हैं कि अन्न सस्ता होना चाहिए। कुली, मजदूर, भिखारी भी कहते हैं कि अन्न सस्ता होना चाहिए। सभी कहते हैं कि अन्न सस्ता होना चाहिए। ब्राह्मण कहता है कि दक्षिणा ज्यादा चाहिए। सरकारी नौकर कहता है कि तनख्वाह ज्यादा चाहिए, प्रोफेसर और मास्टर कहता है कि वेतन ज्यादा मिलना चाहिए, लड़कों से फीस ज्यादा चाहिए और ये सब मिलकर कहते हैं कि अन्न सस्ता चाहिए। अब किसान पूछता है कि मेरा क्या होगा? मैं क्यों अन्न का उत्पादन करूँ? इसका कोई जवाब नहीं देता।

हमारे बहुत-से मित्रों ने जमीन खरीद ली है। कहते हैं कि काला पैसा सफेद करने के लिए यही अच्छा साधन है। जमीन खरीद ली, तो क्या अन्न की फसल ज्यादा होगी? कहते हैं, बेवकूफ हो क्या, हम अन्न उपजायेंगे? क्या उपजाओगे? तम्बाकू, मिर्च, मूँगफली, सौंफ और ज्यादा से ज्यादा अंगूर और गन्ना। तो फिर दूसरे किसान क्या बेवकूफ हैं, जो अन्न उपजायेंगे! तब तो फिर सभी तम्बाकू उपजायेंगे और सभी तम्बाकू खायेंगे।

आखिर उत्पादन की प्रेरणा क्या हो?

अन्न के उत्पादन की प्रेरणा क्या हो, यह आज के अर्थशास्त्र का एक प्रश्न है। किसी अर्थशास्त्री ने इसका उत्तर देने की चेष्टा नहीं की। अर्थशास्त्र में हर एक की कीमत आंकी जाती है जिसके पास विद्या है, बाजार में उसकी कीमत की चिप्पी लगी हुई है, आपके पास पांडित्य है तो चिप्पी लगी हुई है, पूजा करने की शक्ति है तो चिप्पी लगी हुई है। विश्वनाथजी की पूजा पर भी चिप्पी है, ठाकुरदास में चिप्पी है, नाथद्वारा में भी चिप्पी है, रामेश्वर में चिप्पी लगी हुई है। आज का अर्थशास्त्र यह कहता है कि जिसके बदले में कुछ मिलता है वह सम्पति है, जिसके बदले में कुछ नहीं मिलता वह सम्पत्ति नहीं है। तुलसीदास का रामचरित-मानस सम्पत्ति नहीं है, क्योंकि तीन आने में मिलता है, जासूसी उपन्यास सम्पत्ति है, क्योंकि पाँच रुपये में मिलता है, ग्वाले का दूध सम्पत्ति है, डेढ़ रुपया किलो मिलता है, माँ का दूध सम्पत्ति नहीं है, क्योंकि मुफ्त मिलता है। लता मंगेश्कर का गीत सम्पत्ति है, क्योंकि एक गीत गाने के पाँच हजार रुपये मिलते हैं, मीराबाई का भजन सम्पत्ति नहीं है; क्योंकि उसकी कोई कीमत नहीं है। यह अर्थशास्त्र है, जो सिखाया जा रहा है। अर्थशास्त्र में मेहनत बिकती है, विद्या बिकती है, कला बिकती है, उद्योग बिकता है, इन्सान बिकता है और अन्त में भगवान भी बिकता है। जब वस्तु बिक्री के बजाय उपभोग के लिए बनेगी तो उत्पादन की प्रेरणा स्वतः विकसित होगी।

गांधी ने हमें बताया

जो क्रान्तिकारी होता है उसका दिमाग किताब से बाहर होता है, जीवन में रहता है। इतिहास की पुस्तक और राज्य-शास्त्र की पुस्तक लेकर अगर गांधी बैठता तो कभी सत्याग्रह का आविष्कार नहीं कर सकता था। पिछले २१ वर्षों में जितने सत्याग्रह हुए, उतने गांधी के अपने जीवन में नहीं हुए। फिर भी गांधी के सत्याग्रहों का प्रभाव हुआ और इन सत्याग्रहों से किसी की भी शक्ति नहीं बनी, क्योंकि इनके पीछे एक ही उद्देश्य था कि दूसरों का हृदय-परिवर्तन हो। अपने हृदय का नहीं, जिसका अपना हृदय-परिवर्तन न हुआ वह दूसरे का हृदय-परिवर्तन करने का अधिकारी नहीं है, यह हमें गांधी ने बताया।

दिमाग सही रखिए

एक आदमी ने पैर का जूता उतारा और दूसरे के सिर पर दे मारा। अब एक तीसरा व्यक्ति बेचारा दौड़ा-दौड़ा बाजार में बाटा की दुकान पर गया कि कल से आपको दुकान बन्द कर देनी चाहिए। उसने कहा, 'भाई मैंने क्या किया?' 'अरे, तेरी दुकान न होती तो यह जूते न चलते।' दुकानवाला कहने लगा, 'भाई साहब, मैंने तो ये जूते पैर में पहनने के लिए दिये थे, अब तुम सिर पर मारते हो तो तुम्हारा दिमाग बिगड़ा हुआ है या मेरा?'

दिमाग अगर सही न हो तो कला साहित्य, संस्कृति, सम्प्रदाय, धर्म, भगवान, सब हथियार बन जाते हैं और इन सबको लेकर लड़ाई हो जाती है। दिमाग अगर सही नहीं हुआ तो दुनिया के जितने अच्छे साधन हैं, सबके सब बुरे साबित होते हैं।

समाजीकरण की शुरुआत कहाँ से हो?

गांधी ने इतिहास की पुस्तकें, दर्शन की पुस्तकें, राज्यशास्त्र की पुस्तकें ताक में रख दी, तो सत्याग्रह का आविष्कार किया। मार्क्स कोरा अर्थशास्त्री नहीं था, इसलिए क्रान्तिकारी हुआ। क्रान्तिकारी के लिए कोई चीज असम्भव नहीं होती। क्रान्तिकारी पण्डित नहीं होता, लकीर का फकीर नहीं होता, ग्रन्थवादी नहीं होता। आज गांधी के बाद विनोबा इस प्रश्न का उत्तर खोज रहा है कि अन्न-उत्पादन की प्रेरणा क्या हो? उसका जवाब है कि अन्न के उत्पादन के साधन, अन्न के उत्पादन के औजार और अन्न के उत्पादन की जमीन, तीनों का ग्रामीकरण होना चाहिए। जमीन सबकी, मेहनत सबकी। समाजवादियों ने इसे 'समाजीकरण' कहा था। विनोबा कहता है कि यह समाजीकरण ग्राम से शुरू होगा और आज वह इसी खोज में लगा हुआ है और इसी के समाधान में प्रवृत्त है।

प्रेषक—गुरुशरण

गुण-दर्शन

किसी का दोष हमें दिखता है, तो वह हमारा ही दोष है, यह मानना चाहिए। उसकी निन्दा करना दूसरा दोष होगा और उसके पीछे उस दोष की चर्चा या निन्दा करना तीसरा दोष। इस तरह एक के बाद एक दोष का सम्पुट चढ़ता जायगा, तो गुण-दर्शन होगा ही नहीं। फिर गुण-दर्शन नहीं होगा तो ईश्वर का दर्शन भी लुप्त हो जायगा। इसलिए हमें अपने भी दोषों का दर्शन नहीं करना चाहिए। अपने गुणों का ही दर्शन करना होगा। इस तरह गुण-स्तवन, गुण-दर्शन, गुण-वर्धन होना चाहिए। इसी को भगवान के गुणों का स्तवन कहते हैं।

—विनोबा

www.vinoba.in

मेरी अध्यक्षता के छह वर्ष

[सर्व सेवा संघ के वार्षिक अधिवेशन तिरुपति में सर्व सेवा संघ के तत्कालीन अध्यक्ष श्री मनमोहन चौधरी ने अपने कार्य-काल के छह वर्षों का सिंहावलोकन प्रस्तुत किया, जिसे नीचे दिया जा रहा है। सं०]

जागतिक परिस्थिति

आज की दुनिया बहुत छोटी हो गयी है और सारी मानव-जाति एक-दूसरे के बहुत नजदीक आ गयी है। दुनिया में कहीं भी कुछ होता है, तो उसका असर तुरन्त सारी दुनिया पर होता है। हमारा काम इसी जगत के सन्दर्भ में चल रहा है। जागतिक परिस्थिति में हमारी सबसे बड़ी दिलचस्पी क्रान्ति और शान्ति में है। इस अवधि में दुनिया के कई देशों में सबसे अधिक क्रान्तिकारी तात्पर्य रखनेवाली घटना विद्यार्थियों के विद्रोह की रही। अपने देश में हम वर्षों से विद्यार्थियों की उथल-पुथल से परिचित थे और उसका कारण-निर्णय भी कर रखा था। हममें से अधिकतर लोग मानते रहे कि विद्यालयों में नैतिक शिक्षण का अभाव, अनुशासन का अभाव, शिक्षकों के नैतिक स्तर और प्रभाव में ह्रास और राजनैतिक पक्षों की दस्तन्दाजी मुख्य कारण हैं, जिनसे विद्यार्थी अशान्त हो रहे हैं। पर अमेरिका, फ्रांस, जर्मनी, इगलैंड आदि मुल्कों की उथल-पुथल की लहर प्रबल रूप से दौड़ने लगी, तो फिर मानना पड़ा कि यह सिर्फ अपने देश की नहीं, सारी दुनिया की एक नयी विशेषता है। इस घटना-प्रवाह का सारा तात्पर्य समझने के लिए और भी समय लगेगा पर इतना तो स्पष्ट है कि तारुण्य की जो शक्ति आज तक प्रचलित समाज के साँचे में ढलने में ही अपनी सार्थकता समझती थी, अब वह मुक्त हो रही है और नये रास्ते ढूँढ़ रही है। मानव के भविष्य के लिए इसमें अपार आशाजनक सम्भावनाएँ भरी हुई हैं। उल्लेखनीय है कि विश्व के विद्यार्थी-आन्दोलन में अक्सर शान्ति और समानता की ऊँची आकांक्षा पायी जाती है तथा पार्टीसिपेटरी डेमोक्रेसी, विकेन्द्रीकरण, कम्युनिटी भावना आदि ऐसे मूल्यों पर जोर दिया जा रहा है, जिन्हें हम अपने आन्दोलन में भी ऊँचा स्थान देते हैं।

चीन में इन दिनों जबरदस्त उथल-पुथल चलती रही, खास करके सांस्कृतिक क्रान्ति की। वहाँ के सारे घटना-प्रवाह की तफसील और जानकारी इस देश में पाना तो कठिन है, पर जितनी मिलती है, उससे यह धारणा बनती है कि वहाँ की घटनाएँ बहुत महत्त्व की हैं। पचहत्तर करोड़ के विशाल जनसमुदाय को जाग्रत और सक्रिय बनाने का एक प्रयास वहाँ चल रहा है। यह मानना गलत है कि वहाँ एक तानाशाही है, इसलिए सब कुछ डण्डे के बल से ही कराया जा रहा है। लोगों को प्रेरित करने के लिए कई अन्य तरीके वहाँ अपनाये जा रहे हैं। सामाजिक और आर्थिक समानता का ऐसा स्तर तुरन्त हासिल करने का ध्येय उन लोगों ने रखा है,

मनमोहन चौधरी

जो दुनिया में कहीं भी उपलब्ध नहीं है। इसलिए वहाँ की घटनाएँ ध्यान में लेने योग्य हैं।

अमेरिका में नीग्रो के नागरिक अधिकार-आन्दोलन ने भी पिछले वर्षों में जोर पकड़ा और डा० किंग के नेतृत्व में उसे नयी-नयी सफलताएँ मिलीं। पर साथ-साथ वहाँ हिंसक प्रदर्शनों का भी जोर बढ़ा है और किंग के अनुयायियों का असर कम दिखाई दे रहा है। इस उग्र प्रतिक्रिया की ओरों में प्रतिक्रिया भी उग्र हो रही है। पर यह एक प्रसन्नता की बात है, इसके प्रति वहाँ का नेतृत्व काफी समझदारी से देख रहा है और उसे वैज्ञानिक तरीके से समझने का प्रयत्न कर रहा है।

शान्ति के मामले में इस अर्से में दुनिया की स्थिति डाँवाडोल रही। कभी क्यूबा में मिसाइल्स के मामले को लेकर विश्वयुद्ध छिड़ने का खतरा बहुत नजदीक दीखता था, तो कभी परमाणु-शस्त्रों का फैलाव रोकने सम्बन्धी समझौते से लगता था कि बस अब शान्ति का मार्ग प्रशस्त हो रहा है। कुल मिलाकर दीखता है कि विश्वयुद्ध का खतरा कम हुआ है, पर वियतनाम या अरब-इजराइल युद्ध जैसी छोटी-छोटी लड़ाइयों के कारण मानव को बहुत बड़ा दुःख का भार उठाना पड़ रहा है, यह भी ध्यान में आ रहा है।

तीन कारणों से दुनिया में शान्ति का पक्ष मजबूत हुआ है, ऐसा कह सकते हैं: एक, तारुण्य शक्ति का स्फोट, जिसका जिक्र ऊपर आ चुका है। दो, चेकोस्लोवाकिया की अभूतपूर्व घटना, और तीन, शक्ति-गुटों का टूटना।

वारसा-शक्तियों के फौजी आक्रमण के सामने चेकोस्लोवाकिया की जनता का निःशस्त्र और शान्तिपूर्ण प्रतीकार पिछले वर्ष की सबसे महत्त्वपूर्ण और सारी दुनिया को चौंका देनेवाली घटना रही। विदेशी आक्रमण के सामने अहिंसक प्रतीकार किस तरह किया जाय, इसे लेकर पिछले दिनों काफी जल्पना-कल्पना चलती रही। आज तक यह चीज कल्पना में रही थी, व्यवहार में इसके प्रयोग का कोई दृष्टान्त अपने सामने नहीं था। चेकोस्लोवाकिया ने इसका एक यथार्थ पाठ दिया है। इस प्रयोग में कई कमजोरियाँ रहना स्वाभाविक था। पर इसने शान्ति का एक नया आयाम खोल दिया है और विश्व के लिए एक नयी आशा पैदा की है।

फूट अच्छी चीज नहीं है, पर जहाँ एकता गलत विचार पर आधारित होती है और एकता के अन्तर्गत परस्पर सम्बन्ध में विषमता होती है, वहाँ स्वतंत्र विचार तथा समानता की माँग के कारण एकता टूटने में अच्छाई होती है। आज दुनिया में यही हो रहा है। अमेरिका और रूस की दादागीरी खतम हो रही है। साम्यवादी गुट के छोटे देश अब अपने-अपने देश के अन्दरूनी कारोबार तथा अपने विदेश-सम्पर्क, व्यापार आदि में भी ज्यादा स्वतंत्रता माँग रहे हैं और वैसा बरतने का प्रयत्न भी कर रहे हैं। उधर पश्चिमी गुट में भी वही हो रहा है। यह सब दुनिया में भय कम होने का लक्षण है और शान्ति के अनुकूल है।

इस सन्दर्भ में यह बात भी ध्यान में लेने योग्य होगी कि इस साल दुनिया में आधे से अधिक मुल्कों में जनता तथा सरकार, दोनों

की ओर से गांधी जन्म-शताब्दी मनाने का आयोजन चल रहा है। इस समारोह में औपचारिकता का अंश बहुत होगा। फिर भी सारी चीज को औपचारिकता मानकर उसका महत्त्व कम करना उचित नहीं। गांधी कोई ऐसे बड़े और शक्तिशाली देश का राष्ट्र-पुरुष नहीं था, जिसका शताब्दी-समारोह मनाकर दुनिया के देश उस देश की सरकार की खुशामद करने का प्रयत्न करें। इसमें तो गांधीजी के विचार और आदर्श के लिए दुनिया का आदर ही दिखाई देता है। उसकी शान्ति की भूख दीखती है।

राष्ट्रीय परिस्थिति

अब अपने देश की ओर ध्यान दें, तो यहां पिछले वर्षों में बहुत कुछ हुआ भी और नहीं भी। पिछले आम चुनाव में कई प्रान्तों में कांग्रेस के बदले दूसरे पक्षों का सत्ता में आना बहुत बड़ी महत्त्वपूर्ण घटना थी। इससे देश का राजनैतिक नक्शा ही पलट गया और कई नये सवाल सामने आये, जिनमें केन्द्र और राज्यों के परस्पर सम्बन्ध का सवाल मुख्य है। दूसरा सवाल है दल-बदल का, जो राजनैतिक अपरिपक्वता और अनैतिकता का लक्षण है। देश को इस समय यह समस्या बहुत सता रही है और मनोरंजन के साधन भी मुहैय्या कर रही है।

इन दिनों भाषा की समस्या को लेकर, अलग प्रांत की मांग को लेकर, जोरदार आन्दोलन और अशांति हुई। शिवसेना, गोपालसेना, आदि सेनाओं का बोलबाला रहा। इस तरह काफी संकीर्णता और भेद-बुद्धि प्रकट हुई। तेलंगाना के स्वतंत्र राज्य की मांग इस घटना-प्रवाह का इस समय का आखिरी दृष्टान्त है। यद्यपि ये सारी घटनाएँ तथा भावनाएँ देश की एकता के लिए खतरनाक हैं, फिर भी यह ध्यान में रखना चाहिए कि देश की आर्थिक दुर्दशा भी ऐसी भावनाओं को बढ़ावा देने के लिए जिम्मेदार है।

दो लड़ाइयों के कारण तथा विदेशी सहायता की सरगर्मी कम होने से अब अपनी अर्थ-व्यवस्था की बुनियादी कमजोरियाँ स्पष्ट रूप से प्रकट हो गयी हैं। पिछले दो-तीन साल के व्यापक सूखा और भयानक अकाल भी अर्थ-व्यवस्था को डांवाडोल करने में कारणीभूत रहे हैं। पर यह भी भूलना नहीं चाहिए कि यह सूखा भी पिछले बीस साल की गलत योजना का ही परिणाम था। हमारे समाज और अर्थरचना की बुनियाद में रही शोषणवृत्ति के कारण सूखों तथा दूसरी नैसर्गिक विपत्तियों के दुष्परिणाम और भी उत्कट हुए। गाँवों की, यानी देश की आबादी की ८५ प्रतिशत की एक तरह से अवहेलना करके खुशहाली पैदा करने का प्रयत्न किया गया, जो स्वभावतः निष्फल साबित हो रहा है। गाँवों की दुर्दशा सारे समाज को ग्रस रही है। आज शिक्षितों में बेकारी व्यापक है। दस हजार इंजीनियर बेकार हैं। इससे अधिक विचित्र और सारी अर्थरचना को निकम्मी साबित करने के लिए पर्याप्त बात और क्या हो सकती है? जिस देश के नवनिर्माण के लिए कितना भी विशेष ज्ञान और योग्यता कम पड़नेवाली है, वहाँ यह ज्ञान और योग्यता उपयोग में नहीं आ पा रही है। हमारे अर्थ-मंत्री तथा दूसरे मंत्री और नेता बीच-बीच में कहते रहे हैं कि 'यह देखो, आर्थिक स्थिति सुधर रही है, मन्दी खतम हो रही है।' लगता है जैसे स्वसम्मोहन (ऑटोसजेशन्) की प्रक्रिया अपनायी जा रही है। मानो 'मैं अच्छा हो गया हूँ, मैं अच्छा हो गया हूँ' रटने मात्र से तबीयत सुधर जायगी। असल में नीति और कार्य में बुनियादी परिवर्तन की जरूरत है, पर उसका कोई लक्षण कहीं नजर ही नहीं आता। वामपन्थी-प्रधान संयुक्त मोर्चा से यह उम्मीद की गयी थी कि वे जमीन की समस्या, ग्रामीण बेकारी तथा दूसरे महत्त्वपूर्ण सवालों पर कोई नये अभिक्रम का सबूत देंगे। पर वैसा अभी तक नहीं हुआ।

देश में जो भी संकीर्णता और अविवेकमूलक तत्त्व काम कर रहे हैं, उनमें सबसे खतरनाक वह तत्त्व है जो साम्प्रदायिकता पर आधार रखता है और इस देश में एक 'हिन्दू-राष्ट्र' स्थापित करने का स्वप्न देखता है। इसने अपना प्रचार और संगठन काफी सक्षमता और सातत्य के साथ जारी रखा है। अक्सर अपने देश के साम्प्रदायिक हंगामों को पाकिस्तानी घटनाओं की प्रतिक्रिया समझी जाती है, पर पिछले दो-तीन वर्षों में यहाँ कई ऐसे साम्प्रदायिक हंगामे हुए, जिनके लिए यह कारण कतई नहीं दिया जा सकता। सोच-समझकर मुसलमानों को सताने के उद्देश्य से ऐसे कई हंगामे कराये गये हैं।

हिन्दू-संस्कृति पर आधारित भारतीय राष्ट्र की कल्पना इस तत्त्व की हरकतों का मुख्य आधार रहा है। जयप्रकाशजी ने इस सवाल को देश के सामने बार-बार उठाया है कि भारतीय राष्ट्रीयता की कोई विधायक और असाम्प्रदायिक स्पष्ट कल्पना दूसरा कोई पक्ष या तत्त्व आज देश के सामने नहीं रख रहा है। ऐसी एक कल्पना विकसित होनी और रखी जानी चाहिए। प्रसन्नता का विषय है कि पिछले दिनों जयप्रकाशजी द्वारा आयोजित राष्ट्रीय कन्वेन्शन में इस दिशा में ठोस कदम उठाना सम्भव हुआ है।

नागालैण्ड और कश्मीर की समस्याओं में अपने आन्दोलन की ओर से विशेष दिलचस्पी ली जाती रही। नागालैण्ड में जयप्रकाशजी ने ही काम किया। बाद में डा० आरम उनकी मदद में गये। वहाँ की स्थिति में आज जो परिवर्तन हुआ है तथा समस्या के हल की सम्भावनाएँ उज्ज्वलतर हुई हैं, उसमें इन सबके प्रयत्नों की बड़ी देन है। कश्मीर के मामले में अभी तक अपने प्रयत्नों का कोई खास असर नहीं हुआ है।

इस तरह अपने देश के बड़े-बड़े सवाल जहाँ के तहाँ खड़े हैं और उनका कोई समाधानकारक हल शीघ्र होगा, ऐसा नहीं लगता। असल में इन समस्याओं के हल के लिए अपने समाज में राजनैतिक और आर्थिक सत्ता का सन्तुलन ही बदलना चाहिए। जिस जनसमूह के कल्याण की अवहेलना हो रही है, उसकी ताकत बननी चाहिए और देश के सारे कारोबार में यह ताकत अनुभूत होनी चाहिए। नयी सरकारों के सत्ता में आने से भी ऐसा नहीं हुआ। अवश्य ही पिछले आम चुनाव और बाद के नन्हें मध्यावधि चुनाव के परिणाम इसके सबूत हैं कि जनता में चेतना बढ़ी है, पर अभी तक ताकत बनी नहीं है। अभी वाम से दक्षिण तक के सारे पक्षों का खेल समाज के एक छोटे से अंश के अन्दर ही अन्दर चलता है। इसलिए सत्ता एक पक्ष से दूसरे पक्ष के हाथों में जाने मात्र से जनता के हाथ में गयी, जनता की ताकत खड़ी हुई,

ऐसा नहीं कह सकते। हाँ, क्रान्तिकारी परिवर्तन चाहनेवाले प्रगतिशील पक्षों के हाथ में सत्ता जाने से जनता की ताकत बनने में मदद हो सकती है। पर यह इस बात पर निर्भर है कि ये दल सत्ता में रहते समय किस प्रकार काम करते हैं। जनता की ताकत बनाने के लिए जनता में काम करने, जन-आन्दोलन खड़े करने की जरूरत है। सत्तारूढ़ क्रान्तिकारी पक्ष अगर जन-आन्दोलनों के लिए अहिंसक तरीकों का उपयोग करेंगे, तो सत्ता और जन-आन्दोलन इन दो घोड़ों पर सवार रहना उनके लिए असाध्य नहीं होगा। पर अब तक वे अहिंसा की आलोचना और उपेक्षा करते आये हैं। आगे भी वैसे ही करते रहें, तो सत्ता और जन-आन्दोलन में विरोध होगा।

त्रिविध कार्यक्रम

हमने माना है कि त्रिविध कार्यक्रम के माध्यम से ही जनशक्ति बनेगी। अगर हमारा यह विश्वास ठोस है, तो अपने आन्दोलन को उस दृष्टि से जांचना चाहिए और परिस्थिति तथा समस्याओं से उसके सम्बन्ध की स्पष्ट धारणा भी अपने मन में बनानी चाहिए। जरूरत पड़ने पर अपने अप्रोच और काम के ढंग में समयानुकूल परिवर्तन भी करते रहना चाहिए।

पिछले दिनों अपनी विचारधारा और आन्दोलन में इस प्रकार का विकास होता रहा है। सुलभ ग्रामदान का विचार, तरुण शान्ति-सेना का कार्यक्रम, ग्रामदान के लोक-नीतिक पहलू का स्पष्टीकरण, एग्रो इंडस्ट्रियल अर्थ-रचना की कल्पना, राष्ट्रीय कन्वेन्शन का विचार, ऐसे विकास के कुछ उदाहरण हैं। ये सारे अपने आन्दोलन की विकासशीलता और स्वास्थ्य के सबूत हैं।

ग्रामदान

ग्रामदान आज अपने सारे आन्दोलन का मध्यबिन्दु है। इसमें हम इन वर्षों में कहाँ से कहाँ पहुँच गये हैं।

रायपुर में हमने हिचकते हुए गांधी शत-संवत्सरी तक एक लाख ग्रामदान की बात अपने निवेदन में लिखी थी। आज यह संख्या एक लाख तक पहुँच चुकी है। शायद इस क्षण एक लाख को पार कर चुकी है। सात प्रान्तों में राज्यदान का संकल्प हो चुका है। दो साल पहले 'प्रखण्ड-दान' एक अनोखी बात थी। पर अब कहीं 'जिला-दान' होता है, तो हम चलते-चलते उसे सुन लेते हैं।

किसी लड़ाई में हम जब एक फौज के आगे बढ़ने के समाचार (विजय के समाचार) सुनते हैं—सुनते हैं कि 'वह फलाँ जगह पर दस मील आगे बढ़ी है या फलाँ नगर पार किया है'—तो इस सूखे-सूखे तथ्य में से हठात् यह बात हमारी कल्पना में नहीं आती कि उसके पीछे कितना बलिदान, कितनी वीरता और परस्पर सहयोग, नेतृत्व-शक्ति और विशाल परिश्रम का आधार है। इन सबकी कहानियाँ अलग से, बाद में, धीरे-धीरे सामने आती हैं।

यही बात इन लाख ग्रामदान और अठारह या बीस जिलादानों के मामले में है। इन्हें साकार करने के लिए कितने हजार लोगों ने काम किया, उनकी कैसी भावना थी, कितना परिश्रम इन लोगों ने किया, कैसे-कैसे कष्ट उठाये, कितना प्रेम, भाईचारा, करुणा का दर्शन इस सारी प्रक्रिया में मिला—आज किसी के पास इसका कोई हिसाब नहीं है। फिर इनका 'हिसाब' (आँकड़े) प्राप्त करेंगे तो भी उससे हमें इन सबका सही भान होने की कम उम्मीद है।

आज ग्रामदान आसानी से हो जाते हैं। उड़ीसा में पच्चीस-तीस विद्यार्थी निकले और एक प्रखण्डदान करीब-करीब पूरा किया—आज यह इतना आसान हो गया है। इससे मन में शंका होती है कि इसमें कहीं धोखा तो नहीं है? कोरे, कच्चे विद्यार्थियों में यह ताकत कहाँ से आ गयी? पर ध्यान में रखना चाहिए कि जिस दिन विद्यार्थियों की टोली हस्ताक्षर के लिए निकली, उस 'प्रखण्ड-दान' की प्रक्रिया उस दिन शुरू नहीं हुई थी। वह तो बारह साल पहले शुरू हुई थी, जब लोगों के कान में पहले पहल ग्रामदान की पुकार पड़ी। उनके चित्त में उसी दिन विचार का बीज बोया गया था। विचार-मंथन की शुरुआत उसी दिन से हुई थी। विद्यार्थी जब उसे तोड़ने के लिए गये, तब तक फल बहुत हद तक पक चुका था।

हमें ध्यान में रखना चाहिए कि व्यापक रूप में लोगों के दिल पर इस प्रकार अदृश्य प्रभाव हमारे आन्दोलन के इन वर्षों की एक महान् उपलब्धि है और यह हमारी आज की सबसे बड़ी पूँजी है, सम्पदा है। इसीके आधार पर हम सफलता की ओर बढ़ सकेंगे।

अब तक जो लाख या उससे अधिक ग्रामदान हुए हैं, उनमें भी सबसे बड़ी उपलब्धि गाँव की संख्या या जमीन का पैमाना नहीं है। वह तो है उनकी प्राप्ति में लगे हजारों लोगों की भावना, उत्साह, श्रद्धा, मेहनत आदि में। हमारी श्रेष्ठ उपलब्धि ग्रामदान करनेवाले करोड़ों लोगों की भावना और श्रद्धा है। ये ही जमातें सर्वोदय-आन्दोलन की आधार-शिला हैं, यह भूलना नहीं चाहिए।

अहिंसक प्रतीकार

हमारी यह महान् आकांक्षा रही है कि आन्दोलन जन-आधारित बने, जनता का आन्दोलन बने। आज यह जन-आन्दोलन बन चुका है, ऐसा तो नहीं कह सकते, पर इतना जरूर कह सकते हैं कि जनशक्ति का झरना आज बहने लगा है। उसका प्रवाह आज मन्द है, पर वह शुरू हुआ है और आगे चलकर विशाल तथा बलशाली बनने का संकेत इसमें है। किसान, मजदूर, शिक्षक, विद्यार्थी, सरकारी कर्मचारी, आदि शिक्षित, अशिक्षित कितने वर्गों के कितने लोगों का सहकार आज इस आन्दोलन को प्राप्त है। सर्व सेवा संघ की ओर से मैं इन मित्रों का, ग्रामदानी गाँवों की सारी जनता का अभिनन्दन करता हूँ, महान् सर्वोदय-आन्दोलन में अपने साथी के नाते उन सबका मैं स्वागत करता हूँ।

बापू से हमने सत्याग्रह द्वारा प्रतीकार की सीख ली थी। विनोबाजी ने हमारे सामने भूदान-यज्ञ के माध्यम से विधायक सत्याग्रह का कार्यक्रम और फिर उसका सांगोपांग विचार रखा। उन्होंने कहा: 'स्वतंत्रता, लोकतंत्र और अणुबम के जमाने में सत्याग्रह में सौम्य-सौम्यतर की प्रक्रिया चलेगी।' ग्रामदान की इस व्यापक और विशाल सफलता में इस विधायक तरीके की ही सफल विजय है। यह सफलता बताती है कि विधायक सत्याग्रह का तरीका, उसकी स्पिरिट, हमारे सैकड़ों साथियों को सधी है। पर साथ ही प्रतीकारात्मक सत्याग्रहों की आवश्यकता

अपने देश से मिट नहीं गयी और असम, तमिलनाडु, उत्तरप्रदेश, और राजस्थान में बेदखली, शराबबन्दी आदि समस्याओं को लेकर, सफल अहिंसक प्रतीकार हुए हैं। इनके अलावा और भी स्थानों पर अपेक्षाकृत छोटी समस्याओं को लेकर प्रतीकार के सफल यत्न हुए हैं। कुल मिलाकर लोगों में जगह-जगह अहिंसक प्रतीकार की शक्ति बढ़ी है।

खादी जगत् और ग्रामदान

ग्रामदान, खादी तथा शान्तिसेना का पूरा समन्वय सध चुका है, ऐसा नहीं कह सकते। अभी जोर ग्रामदान पर ही है और वह स्वाभाविक भी है। कारण ग्रामदान तो बुनियाद डालने का काम है। पर समन्वय हुआ ही नहीं, यह भी नहीं कह सकते। खादी-जगत् के साथ इन वर्षों में ग्रामदान का घनिष्ठ सम्पर्क हुआ है। खादी-जगत् के वरिष्ठ कार्यकर्ता ग्रामदान-तूफान के अगुवा बने हैं। गांधी-आश्रम, बिहार खादी-ग्रामोद्योग संघ, तमिलनाडु सर्वोदय-संघम् तथा अन्य सैकड़ों छोटी-छोटी संस्थाओं के हजारों कार्यकर्ताओं ने तूफान में भाग लिया है, जिससे उनमें एक नया उत्साह और आत्मविश्वास पैदा हुआ है। इन संस्थाओं ने तूफान के लिए लाखों रुपये खर्च करने का तय किया है और वे कर भी रही हैं। इस तरह खादी में ग्रामदान का प्रवेश हुआ है। ग्रामदानी गांवों में भी खादी का प्रवेश शुरू तो हुआ है, पर अभी तक कम ही हो पाया है। प्रसन्नता की बात है कि खादी-कमीशन ने प्रखण्डदान-क्षेत्रों में ही अपनी सघन-क्षेत्र-योजना शुरू करना तय किया है और कई जगह शुरू कर भी दिया है।

शान्तिसेना

ग्रामदानी क्षेत्रों में ग्राम-शान्ति-सेना संगठित करने का प्रयत्न तो दो-तीन प्रान्तों में शुरू हुआ है, पर काम बहुत कम हो पाया है। आन्दोलन में लगे हजारों लोग शान्ति का ही कार्य कर रहे हैं। सवाल है उनके योगदान को स्थायी बनाने का, उसे संगठन का रूप देने का।

इन वर्षों में देश में राउरकेला, जमशेदपुर से लेकर मद्रास, पटना, रांची तक बड़ी-बड़ी अशान्ति की घटनाएँ हुईं। इन घटनाओं में उस क्षेत्र के शान्ति-सैनिकों ने तथा उनसे सहानुभूति रखनेवाले मित्रों ने अपनी तत्परता, निष्ठा और हिम्मत का ठोस परिचय दिया। पर साथ ही यह भी स्पष्ट हुआ कि परिस्थिति पर काबू प्राप्त करने की दृष्टि से शान्तिसेना अभी भी अपने मकसद से कोसों दूर है। पर इन वर्षों में शान्तिसेना का संगठन ठोस और व्यवस्थित बनने की दिशा में काफी आगे बढ़ा है और सक्रिय शान्तिसैनिकों की संख्या भी बढ़ी है।

इस अवधि में 'किशोर शान्तिदल' की नयी प्रवृत्ति शुरू हुई, जो बाद में 'तरुण शान्तिसेना' में परिवर्तित हो गयी। पाँच-छह साल पहले जब यह शुरू हुई, तो इसके महत्त्व का जितना भान था, आज वह कई गुना बढ़ गया है। आज सारी दुनिया में तरुण या विद्यार्थी वर्ग एक नयी क्रान्तिकारी शक्ति के रूप में प्रकट हुआ है। इस महान् नयी शक्ति को शान्तिमय क्रान्ति की दिशा दिखाने की प्रतिज्ञा लेकर तरुण शान्तिसेना खड़ी हुई है। तमिलनाडु, उड़ीसा आदि के अनुभवों से लगता है कि ग्रामदान के क्रान्तिकारी प्रवाह के साथ इस तारुण्य-शक्ति का प्रवाह अवश्य जुड़ सकता है, उसमें नयी जान डाल सकता है।

'आचार्यकुल' की कल्पना भी इन्हीं दिनों विनोबाजी ने दी। आचार्यों की शक्ति तारुण्य-शक्ति की परिपूरक बन सकती है और समाज को दिशा-सूचन करने में बड़ी भारी मदद कर सकती है।

सरहद की सेवा

इस अर्से में भारत को एक बार चीन से, तो दूसरी बार पाकिस्तान से टक्कर लेनी पड़ी। चीन की लड़ाई से सर्वोदय-जगत् को यह भान हुआ कि सरहद पर बसी प्रजा में नीति-धैर्य का निर्माण करना, राष्ट्रीय एकता दृढ़ करना और अहिंसक प्रतीकार-शक्ति जागृत कराना एक अपरिहार्य कर्तव्य है। सारी प्रमुख रचनात्मक संस्थाओं के सम्मिलित प्रयत्न से सरहद पर काम शुरू हुआ। पहले चीन की सीमाओं पर शुरू हुआ, फिर पाकिस्तान की सीमाओं पर। आज डेढ़ सौ से अधिक इन केन्द्रों के द्वारा वहाँ जो अनमोल सेवा हो रही है, सैकड़ों कार्यकर्ताओं को जो अनमोल अनुभव मिल रहे है, उन सबके पूरे परिणाम का पता वर्षों के बाद ही चलेगा।

सूखे में सहायता-कार्य

पिछले वर्षों सूखा और बाढ़ जैसी नैसर्गिक विपत्तियों के अवसर पर विभिन्न राज्यों में हुए गैर-सरकारी सेवाकार्य इस सिलसिले में उल्लेखनीय हैं। देशी-विदेशी अनेक सेवा-संस्थाएँ इस काम में पड़ीं और अक्सर सर्वोदय-सेवकों की भूमिका उनमें समन्वय और सामंजस्य लाने की रही। जयप्रकाशजी के मार्गदर्शन में 'बिहार रिलीफ कमेटी' ने ऐसी सेवा की सर्वोत्तम मिसाल पेश की। तात्कालिक परिस्थिति के साथ यह सेवा भी खतम नहीं हुई। संस्थाओं के आपसी सहयोग से ग्रामीण जनता की सेवा का एक नया और स्थायी मोर्चा बिहार में खड़ा हुआ है, जिसमें अनेक नयी और शक्तिशाली सम्भावनाएँ भरी हुई हैं। अन्य राज्य तथा सारे देश के लिए भी ऐसा मोर्चा खड़ा करने की कल्पना का जन्म बिहार के अनुभव में से हुआ है। राहत तथा ग्रामदानी गाँव के निर्माण के काम में विदेशी संस्थाओं से जो सहयोग और सहायता मिली है और मिल रही है, उसके लिए हम उनके कृतज्ञ हैं।

वैचारिक उपलब्धि

व्यावहारिक प्रवृत्तियों के क्षेत्र में जो उपलब्धियाँ हुईं, जो नये अभिक्रम हुए, उनसे कम महत्त्व वैचारिक उपलब्धियों का नहीं, बल्कि ज्यादा ही है। कारण, विचार की गहराई और यथार्थता के आधार पर ही व्यावहारिक प्रवृत्तियों की शक्ति बनती है।

इन दिनों जो सबसे बड़ी वैचारिक उपलब्धि या सफाई हुई है, वह ग्रामदान-आन्दोलन के राजनैतिक आयाम से सम्बन्ध रखती है। लोकनीति का विचार हमारे सामने सोलह-सत्रह साल से है। पर राजनीति और शासन को सर्वोदय-आन्दोलन किस तरह बदलने में समर्थ होगा, यह हमारे सामने स्पष्ट नहीं था। प्रश्न उठता था कि यह आन्दोलन राजनीति-निरपेक्ष रहा है, तो क्या कभी सुधारवादी प्रयत्नों की तरह राजनीति को अलग रखकर ही काम करता रहेगा?

पर 'राज्यदान' की कल्पना आयी, तो उसके साथ यह दर्शन भी हुआ कि आगे

ग्रामदानी इकाइयों के आधार पर दल-निरपेक्ष लोक-प्रतिनिधियों का चुनाव होगा और उनके माध्यम से, राज्यभर की ग्रामदानी जनता के संगठन और चेतनशीलता के आधार पर, शासन और योजना में बुनियादी परिवर्तन लाने का जबर्दस्त प्रयत्न होगा। बल्कि इसी राजनैतिक परिणाम के दर्शन ने ही राज्यदान की आकांक्षा को बलशाली बनाया है। साथ ही सर्वोदय-सेवक की इस भूमिका का महत्त्व भी अधिक स्पष्ट हुआ है कि वह सत्ता की आकांक्षा से अलग रहे तथा लोकशिक्षण और संघर्ष-निरसन का काम करता रहे। यह भी कहा जा सकता है कि लोकतंत्र को पूर्ण और सफल बनाने के लिए देशभर में फैली हुई इस प्रकार की जमात की आवश्यकता राजनैतिक पक्षों के लोग भी एक हद तक अनुभव करने लगे हैं।

इसी सिलसिले में ग्रामस्वराज्य की कल्पना पर भी काफी चिन्तन हुआ है और गाँव के साथ ऊपर की इकाइयों का सम्बन्ध उनके आपसी अधिकारों का बँटवारा, आदि सवालों के जवाब पहले से कुछ अधिक स्पष्ट दीखने लगे हैं।

आन्दोलन के शुरू के दिनों में ग्रामदान में निर्माण और व्यापक प्रसार का वाद-विवाद जोर-शोर से चलता रहा। एक स्तर पर दोनों की आवश्यकता स्वीकृत हुई तथा दोनों एक-दूसरे के परिपूरक माने गये। ग्रामदानों की संख्या अपरम्पार बढ़कर प्रखण्ड तथा जिला-दान तक पहुँचने के परिणामस्वरूप निर्माण के स्वरूप और आयाम की कल्पना में एकदम फरक हुआ है। विनोबाजी की सूचना कि 'निर्माण करना नहीं, कराना है' का तात्पर्य अधिक ध्यान में आया है। उसका छिटपुट प्रयोग भी हुआ है। पर अभी 'कराने' की प्रक्रिया के बारे में पूरी स्पष्टता नहीं हुई है और अमल से हम कोसों दूर हैं।

खादी तथा ग्रामोद्योगों में पावर के उपयोग के बारे में पिछले वर्षों काफी वाद-विवाद चलता रहा। उसके फलस्वरूप इस सवाल पर विचार की काफी सफाई हुई है। पावर के उपयोग की आवश्यकताएँ तथा उसकी मर्यादाएँ काफी स्पष्ट हुई हैं। खादी-ग्रामोद्योगों के साधनों की यांत्रिक कुशलता-वृद्धि के लिए प्रयोगों के साथ-साथ कई साधनों में बिजली का उपयोग भी शुरू हुआ है। यह एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण प्रगति है। इण्टरमीडियट टेक्नालॉजी की कल्पना का उदय और विकास भी इसी सन्दर्भ में बहुत महत्त्व का रहा है। इस पर काफी चिंतन भी हुआ है और इस तरह खादी-ग्रामोद्योग प्रधान अर्थरचना की धारणा में गतिशीलता (डायनेमिज्म) के तत्त्व का समावेश हुआ है, जो पहले नहीं था, या था तो छिपा हुआ। आमतौर पर खादी-ग्रामोद्योगों के समर्थक तथा आलोचकों में यही मान्यता बनी हुई थी कि ग्रामोद्योग का अर्थशास्त्र एक स्थागु (स्टेटिक) अर्थ-व्यवस्था और जीवनस्तर की कल्पना रखता है।

सर्वोदय-आन्दोलन के वैचारिक विकास के सन्दर्भ में एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण घटना 'गांधी विद्या-संस्थान' की स्थापना है। संस्थान के माध्यम से सामाजिक विज्ञान-समूह के जगत् के साथ सर्वोदय-आन्दोलन का सम्बन्ध स्थापित हुआ है। सर्वोदय के विचार और कार्यक्रमों की जाँच अब तक सिर्फ तत्त्व-ज्ञान की कसौटी पर होती रही और वाद-विवाद भी उसी स्तर पर चलते रहे। अब वैज्ञानिकता के समागम से उसे वास्तविकता की कसौटी पर जाँचने का रास्ता खुल गया है तथा वैज्ञानिक प्रयोग और चिन्तन से उसमें नयी सामर्थ्य भरने की, उसके उत्तरोत्तर विकास की अपार सम्भावनाएँ पैदा हुई हैं। इन सबका परिणाम तो आगे, लम्बे अरसे में ही अधिक प्रकट होगा।

उपलब्धियों तथा सफलताओं का विवेचन मेरे विचार में यहाँ पूरा हो जाता है। अब हम जरा विफलताओं या अपूर्णताओं की ओर ध्यान दें।

हमारी कमियाँ

इस प्रकार ये पिछले वर्ष हमारे लिए गतिशील, घटनापूर्ण और प्रेरणाप्रद रहे हैं। मैं इसे अपना अहोभाग्य मानता हूँ कि आप सबने मुझे ऐसे समय पर घटना और विचार-प्रवाह के केन्द्रस्थल के नजदीक रहकर उन सबसे अपने को लाभवान् होने का मौका दिया।

साहित्य-प्रसार का अभाव

हमारी सबसे बड़ी कमी साहित्य के क्षेत्र में रही है। आन्दोलन का विस्तार पिछले वर्षों में बढ़ते-बढ़ते कई गुना हो गया है। एक लाख गाँव ग्रामदान में आये हैं, पर साहित्य का प्रचार दस साल पहले जितना था, उससे कम ही हुआ है। पत्रिकाओं का प्रचार, एक 'भूमिपुत्र' को छोड़कर, स्थिर रहा है या घटा है। इस परिस्थिति को देखकर एक मित्र ने कुछ खेद के साथ और कुछ विनोद से कहा कि 'अपना आन्दोलन साहित्य-निरपेक्ष बन गया है।' हमारे जैसे कम लिखे-पढ़े देश में किसी भी आन्दोलन का पठन के बजाय श्रवण पर आधार रखना एक हद तक स्वाभाविक है। कोई आन्दोलन जन-आन्दोलन का स्वरूप पकड़ने लगता है तो जनता एक-आध नारा, मंत्र या सूत्र को उठा लेती है और उसके आधार पर कुछ कर डालती है। १९४२ में बिहार की जनता ने डेढ़ हजार मील की रेल की पटरी उखाड़ डाली, तो उससे पहले थोड़े ही अध्ययन-मंडलियाँ बनाकर चर्चा-विचार किया था। पर यह भी कारण था कि पटरियाँ उखाड़ने के बाद उतना ही शीघ्र जनता फिर से सुस्त हो गयी, क्योंकि विचार का आधार गहरा नहीं था।

आन्दोलन के जोर पकड़ने के साथ साहित्य की माँग का जोर पकड़ना स्वयं क्रिया-प्रक्रिया नहीं है। पर यह माँग पैदा करना आवश्यक है। कारण, आन्दोलन सिर्फ गतिशील नहीं, प्रगतिशील भी होना चाहिए। लाख गाँवों के लोग आन्दोलन में शरीक हुए हैं, और भी लाखों के होंगे, तो उनके साथ नियमित जीवित सम्पर्क के बिना कोई सुसम्बद्ध, और शक्तिशाली संगठन तथा निरन्तर आगे बढ़नेवाला आन्दोलन कायम रखना असम्भव है। साहित्य इसका प्रधान माध्यम है। पर इस पर विनोबाजी के बार-बार जोर देने के बावजूद हम इस क्षेत्र में खास कुछ कर नहीं पाये हैं।

स्थानीय अभिक्रम का अभाव

दूसरी कमी ग्रामदानी गाँवों में, क्षेत्रों में, स्थानिक सेवक-शक्ति खड़ी करने में रही है। ग्रामदान-प्राप्ति-अभियानों में हजारों लोग शरीक हुए हैं, ग्रामदानी गाँवों में लाखों ऐसे

लोग हैं, जिन्होंने श्रद्धा और उत्साह के साथ अपने-अपने गाँव ग्रामदान कराने का प्रयत्न किया है। यह इन सब साथियों का संग्रह करके एक स्थायी और मजबूत संगठन के सूत्र में बाँधने की ओर हमारा ध्यान बहुत कम गया है। गाँवों की करोड़ों की जनता से सम्पर्क रखने के लिए, उसके पास विचार पहुँचाने के लिए, उनमें खमीर के तौर पर काम करने के लिए यह बीच की कड़ी आवश्यक है। लाखों गाँवों में लाखों सेवकों का यह विशाल जाल आन्दोलन के अस्थिपंजर का काम करेगा। साहित्य द्वारा इन सबसे सम्पर्क रखना, शिविरों के माध्यम से इनका विचार और ज्ञान की भूमिका गहरी बनाना, उनको अभिक्रम के मार्ग सुझाना, यह सब बहुत जरूरी काम है। ग्रामदान के बाद जो सारे काम करने हैं, उनमें यही सबसे अधिक महत्त्व का है। यह सधेगा तो बाकी के सारे काम के लिए आवश्यक शक्ति इसीमें से पैदा होगी। पर इस काम की ओर हमने पर्याप्त ध्यान नहीं दिया है। इसलिए ग्रामदान से जो ताकत पैदा हो सकती है, वह अभी भी सोयी हुई है। कुछ जगहों पर (यथा तमिलनाडु और उड़ीसा में) इस दिशा में थोड़ा-सा प्रयत्न हुआ है और उसका उत्साहजनक परिणाम आया है। तूफान-अभियानों की सफलता के लिए भी यह आवश्यक है। आगे हमें इस दिशा में अधिक ध्यान देना चाहिए।

खादी-कार्य जहाँ के तहाँ

तीसरी विफलता खादी-ग्रामोद्योग के क्षेत्र में रही है। ग्राभाभिमुख खादी का विचार आया और कृषि-उद्योगमूलक एग्रो-इंडस्ट्रियल-समाज की कल्पना, इंटरमीडिएट टेक्नोलॉजी की कल्पना, स्पष्ट हुई। पर व्यवहार में अभी तक हम पुरानी लीक में से निकल नहीं पाये। इधर-उधर कुछ अच्छे और उत्साहजनक प्रयोग हुए, पर खादी के काम का अधिकतम भाग पुरानी लीक में फँसा रहा! इस आचरण के समर्थन में हम यही दलील देते रहे कि 'विनोबाजी जो क्रान्तिकारी खादी की बात करते हैं, वह सिद्धान्त रूप से तो ठीक है, पर लोगों को धन्धा देना, राहत पहुँचाना, बेकारी मिटाना, यह भी करुणा का काम है। इसे हम टाल नहीं सकते।' पर आर्थिक मन्दी के चक्कर में खादी भी फँसी और आज धंधा देने का काम भी फैलने के बजाय संकुचित हो रहा है। अभी हमारे ध्यान में यह बात स्पष्ट रूप से आयी नहीं है कि इतने बड़े देश में करोड़ों दुःखी लोगों को राहत पहुँचाना क्रांति के तरीके से ही सम्भव है। राहत के मामूली तरीके यहाँ निकम्मे साबित होंगे।

आर्थिक अभाव

हमारी आखिरी कमजोरी आन्दोलन के आर्थिक संयोजन के क्षेत्र में है। इस मामले में ऐसा है कि कुछ क्षेत्रों में स्थानिक स्तर पर तो जन-आधार अमुक हद तक सध रहा है। शिविर, अभियान आदि के लिए काफी स्थानिक मदद मिल जाती है। पर ज्यों-ज्यों हम ऊपर जाते हैं, त्यों-त्यों कठिनाई बढ़ती है। गुजरात सर्वोदय-मण्डल की आर्थिक आवश्यकताएँ ठीक-ठीक पूरी हो जाती हैं। अभी महाराष्ट्र में भी एक सफल अर्थ-संग्रह-अभियान चला। इनके अलावा बाकी सारे प्रान्त कठिनाई में हैं और सर्व सेवा संघ सबसे ज्यादा कठिनाई में है। अर्थ-संग्रह के हर प्रकार के उपाय हमारे लिए उपलब्ध हैं और महाराष्ट्र का अनुभव बताता है कि प्रयत्न करने पर सफलता मिल सकती है। अटका कहाँ है, यह हमें सोच लेना चाहिए।

अपने आन्दोलन की सफलताओं और विफलताओं, उसकी शक्ति के स्थान और कमजोरियाँ जिस प्रकार मेरे ध्यान में आयीं, मैंने आपके सामने रख दीं। अब आपको इन पर सोचना है और मेरे विवेचन में कहाँ तक यथार्थता है, यह जाँचना है। मैं इतना तो जरूर कहूँगा कि इनमें सारी सफलताएँ कुछ आन्दोलन की हैं, जनता की हैं और विफलताएँ मुख्यतया संगठन की हैं, या तो प्रान्त की या सर्व सेवा संघ की।

अगले संगठन से आशा

मैं आशा करता हूँ कि आगे जो साथी सर्व सेवा संघ के संगठन का जिम्मा लेंगे, वे नये उत्साह से अधिक सफलतापूर्वक अपनी सारी समस्याओं का सामना कर सकेंगे। उसमें उनको हमारा सबका पूर्ण हृदय से सहकार रहेगा। शायद इस सन्दर्भ में 'उनका-हमारा' कहना योग्य ही नहीं है। हमारी एक ही विशाल मित्र-मण्डली है और उसमें से जिम्मेवारी उठाने के लिए नये साथी आगे आयेंगे, तो कोई पराये तो होंगे ही नहीं।

पिछले महीने में हम कुछ साथी विनोबाजी से मिले थे। उन्होंने उस समय हमसे एक मार्मिक सवाल पूछा: 'मैत्री कितनी सघी? अखिल भारत में आपके ऐसे मित्रों की संख्या कितनी है, जो विचार, कर्म और भावना से एक हैं?' हमने कहा: 'अखिल भारतीय स्तर पर परिचित मित्रों के अलावा प्रान्त-प्रान्त में मित्र-मण्डलियाँ हैं। उनमें कुछ साथी अखिल भारतीय स्तर पर परिचित हैं, पर बाकी के नहीं हैं। फिर भी वे मित्र-मण्डली के अन्तर्गत हैं।' हम सूची बनाने बैठे तो तीन सौ की सूची वहीं के वहीं बनी। जिलों तक का फैलाव ध्यान में लेते तो सैकड़ों के बदले हजारों की सूची बनती। यही अपने आन्दोलन की सबसे बड़ी थाती है कि सारे देश में सैकड़ों का एक सच्चा भाई-चारा कायम हुआ है। गणसेवकत्व का एक आधार खड़ा हुआ है। इसीको मैं आन्दोलन की आध्यात्मिक शक्ति का स्रोत मानता हूँ। इस भाई-चारे को लाखों-करोड़ों तक पहुँचाने की सम्भावना पैदा हो चुकी है, ऐसा करने का कर्तव्य हम पर आ पड़ा है, जबकि लाख गाँव के करोड़ों लोग ग्रामदान में शामिल हुए हैं।

आभार प्रदर्शन

आपने मुझे छह साल तक अध्यक्ष बनाये रखना उचित समझा। अब उससे आपको कितना लाभ हुआ, वह आप जानें। मुझमें कितनी कमजोरियाँ हैं यह तो मैं शुरू से ही जानता था। इन छह वर्षों में सर्व सेवा संघ की गाड़ी अगर थोड़ी-बहुत ठीक चली, तो उसका श्रेय आप सबको, प्रबन्ध-समिति के साथियों को, विनोबाजी, दादा, जयप्रकाशजी शंकररावजी, धीरेनभाई, आदि गुरुजनों के आशीर्वाद और मार्गदर्शन को तथा सर्वोपरि हमारे कमण्डल के साथियों को है। राधाकृष्ण, नारायणभाई, दत्तोबाजी, राममूर्तिजी आदि की मजबूत और समर्थ टोली काशी में जिम्मेदारी उठा लेने के लिए मौजूद न होती, तो पता नहीं, मेरी और आपकी हालत क्या होती। ये सब इतने घनिष्ठ मित्र हैं कि इन सबके मामले में धन्यवाद और कृतज्ञता जैसी औपचारिक बातें निकम्मी मालूम होती हैं।

www.vinoba.in

आबूरोड से तिरुपति तक

आबूरोड में हुए संघ-अधिवेशन के बाद पिछले १० महीनों में जिलादान ने जिलादान की शृंखला से क्रान्ति के आरोहण की एक के बाद एक जो मंजिलें तय की हैं, वे असाधारण महत्त्व की हैं। एक लाख से अधिक ग्रामदान तक हम पहुँच चुके हैं। उत्तरप्रदेश में वाराणसी और चमोली, उड़ीसा में कोरापुट और मयूरभंज, मध्यप्रदेश में सरगुजा, और तमिलनाडु में रामनाथपुरम् जिलादान के सन्निकट हैं। बिहार प्रदेशदान की ओर उत्तरोत्तर आगे बढ़ रहा है। १७ जिलों में से ६ जिलों का ग्रामदान हो चुका है। ६ में तीव्रता से काम बढ़ रहा है। उत्तरी बिहार, जिसकी करीब दो करोड़ से अधिक आबादी है, का पूरा क्षेत्र ग्रामदान में आ चुका है। जिस तीव्र गति से आंदोलन का तूफान देश में चल रहा है, उससे यह आशा बलवती होती जा रही है कि गांधी-शताब्दी के इस वर्ष में एक से अधिक प्रदेशदान हो जायेंगे। प्रदेशदान से भारतदान के नये क्षितिज तक पहुँचने का मार्ग सहज ही प्रस्तुत हो रहा है।

जन-आंदोलन का स्वरूप

ग्रामदान-आंदोलन जन-आंदोलन के रूप में अग्रसर हो रहा है। इस बीच आंदोलन की दिशा में विभिन्न प्रदेशों में नयी पद्धतियों का विकास हुआ है। उड़ीसा और तमिलनाडु में सैकड़ों की संख्या में ग्रामदानी गाँवों के लोग तथा स्थानीय जन इस काम के लिए निकले हैं। स्थानीय अभिक्रम और नेतृत्व जाग्रत तथा संगठित करने में यह प्रयास समर्थ हुआ है। तमिलनाडु में ग्रामदान के लिए ग्रामीण प्रशिक्षित नवयुवक एवं विद्यार्थियों को संगठित करने की नयी पद्धति अपनायी गयी। इन नवयुवकों की शक्ति निरन्तर तमिलनाडु के लक्ष्य को पूरा करने में आज लगी है। तमिलनाडु में कत्तिनों का भी आंदोलन में काफी योग रहा। बिहार में गया और बाद में दक्षिण जिलों में शिक्षकों और पंचायतराज के नेताओं और लोगों के आंदोलन में सम्मिलित होने से काफी ताकत बढ़ी है। श्री विनोबाजी की प्रेरणा से सरकारी अधिकारियों और कर्मचारियों का बड़ी मात्रा में सहयोग बिहार में मिला है। मध्यप्रदेश में तमाम रचनात्मक संस्थाओं का सहकार मिला और उनके द्वारा सुनियोजित पद्धति की व्यूह-रचना की गयी है। राजस्थान, उत्तर प्रदेश और पंजाब में कम समय में सामूहिक शक्ति से सघन काम करने की नयी पद्धतियों का विकास हुआ है। महाराष्ट्र में देशभर की विभिन्न संस्थाओं के कार्यकर्ताओं को लेकर एक सामूहिक शिविर हुआ। महाराष्ट्र में इस प्रकार से अपने-आपमें एक महत्त्वपूर्ण घटना थी, जहाँ विभिन्न रचनात्मक क्षेत्रों में लगे कार्यकर्ता इतनी बड़ी संख्या में एक स्थान पर इकट्ठे हुए और सबका सम्मिलित समर्थन मिला।

विभिन्न प्रदेशों में खादी तथा अन्य रचनात्मक संस्थाओं की ओर से आर्थिक और कार्यकर्ता-सहायता काफी मात्रा में आन्दोलन के लिए प्राप्त हुई। इनमें बिहार खादी-ग्रामोद्योग संघ, गांधी-आश्रम, उत्तरप्रदेश और तमिलनाडु सर्वोदय संघ के नाम उल्लेखनीय हैं।

ग्रामदान-घोषणा-पुष्टि

जहाँ जिलादान हुए हैं, वहाँ कानूनी पुष्टि में दिक्कतों को ध्यान में रखते हुए ग्रामदानी गाँवों की अनौपचारिक रूप में पुष्टि तथा तदर्थ ग्रामसभाओं की स्थापना करने का आग्रह रखा गया है, हालांकि इस दिशा में काम कम हुआ है।

बिहार में पुष्टि की कार्यवाही के साथ-साथ कागजात तैयार करने के पहले गाँवों में ग्रामसभा बनाकर पुष्टि का काम तुरन्त करने के प्रयास किये जा रहे हैं। बिहार में इस तरह अब तक २,७८५ अस्थायी ग्रामसभाओं का गठन विभिन्न जिलों में किया गया है। उत्तरप्रदेश के बलिया और उत्तरकाशी जिलों में ग्रामसभाएँ गठित की जा रही हैं। बलिया जिले में पुष्टि की दृष्टि से तीन प्रखंड लेकर वहाँ सघन काम हाथ में लिया गया है। मध्यप्रदेश के पश्चिमी निमाड में पुष्टि का काम विशेष रूप से शुरू किया गया है। तमिलनाडु के बटलागुंडु क्षेत्र में इस दिशा में विशेष कार्य हुआ है। वहाँ ग्रामसभाएँ गठित हुई हैं। वे नियमित रूप से बराबर मिलती हैं, मुख्य विषयों पर चर्चाएँ करती हैं। इससे स्थानीय लोक-शक्ति का निर्माण हुआ है और दूसरे क्षेत्रों पर अच्छा प्रभाव (इम्पैक्ट) पड़ा है। श्री शंकररावजी की पदयात्रा मार्च से तंजौर (तमिलनाडु) में चल रही है, उसके फलस्वरूप वहाँ प्राप्ति के साथ ही ग्रामसभा की स्थापना और भूमि-वितरण करने का काम शुरू हुआ है।

बचपन में मेरे मन में तरह-तरह की आकांक्षाएँ उठती थीं। किसी भी कुशल मनुष्य को देखता था, तो वैसा बनने की आकांक्षा होती थी। कभी चित्रकार बनने की इच्छा होती थी, तो कभी वैज्ञानिक। कभी लेखक, तो कभी पहलवान। पर एक आकांक्षा कभी नहीं हुई थी और वह है किसी मजमा के अध्यक्ष बनने की।

बचपन से मैं राजनैतिक आन्दोलन के वातावरण में पला और तरह-तरह की बैठकें, सभाएँ, सम्मेलन आदि देखता रहा। उनमें अध्यक्ष की हालत मुझे सबसे दयनीय मालूम होती थी। जब लम्बे, मनहूस भाषण चलते हैं, तब दूसरे लोग सो भी सकते हैं, पर वह बेचारा सो नहीं सकता। इसलिए अध्यक्ष बनने की कल्पना मुझे छू भी नहीं गयी। और यह करतार की करनी देखिए कि मैं जिस बात से सबसे ज्यादा डरता था, वही आप सबके आग्रह से आ पड़ी मेरे पल्ले! पर कबूल करना चाहिए कि यह काम मुझे जितना डरावना और मनहूस मालूम होता था, वास्तव में उतना नहीं रहा। आप सबके सहयोग से सभा-संचालन का काम दिलचस्प रहा और उसमें से मनोरंजन के अवसर भी मिलते रहे।

मैं लगातार यह महसूस कर रहा हूँ कि आप सबका प्रेम और सहयोग मुझे मिला न होता, तो मैं इस स्थान पर टिक नहीं पाता। मैं जानता हूँ कि आपने मेरी कमियों को प्रेम और धीरज के साथ निभाया है। उसका भान होते ही मेरा हृदय भर आता है। मैंने जाने-अनजाने जो गलतियाँ की हैं और मेरे कारण आप लोगों को जो भी दुःख या तकलीफ हुई हो, उनके लिए मैं आपसे क्षमा चाहता हूँ। ०

उड़ीसा, असम, बिहार, महाराष्ट्र, मद्रास, आन्ध्र और राजस्थान में ग्रामदान अथवा भूदान-कानून के अन्तर्गत विधिवत् ग्रामदानी गाँवों की घोषणाओं का काम भी हुआ है। राजस्थान और असम में जहाँ कि बहुत पहले ही ग्रामदान-कानून बने हैं, वहाँ कानूनी रूप से ग्रामसभाओं की स्थापना भी हुई है।

ग्रामदान-अभियान उपसमिति — नेताओं के दौरे

देशभर में ग्रामदान-आन्दोलन को वेग देने, प्रदेशों में परस्पर सहकार, सहयोग और एकसूत्रता लाने, हर प्रदेश की दिक्कतों और प्रगति पर विचार करने तथा ग्रामदान-अभियान में उपस्थित होनेवाले वैचारिक तथा व्यावहारिक प्रश्नों के निराकरण का उपाय खोजने आदि कार्यों के लिए संघ की प्रबन्ध-समिति तथा गांधी-शताब्दी की रचनात्मक उप-समिति की ओर से श्री गोविन्दराव देशपांडे के संयोजकत्व में एक ग्रामदान-अभियान उप-समिति का गठन किया गया है।

आन्दोलन को अखिल भारतीय स्वरूप और नेतृत्व मिले, इस दृष्टि से समय-समय पर समिति के साथियों ने विभिन्न प्रदेशों में शिविरों, सम्मेलनों और यात्राओं में प्रत्यक्ष भाग लिया है और अन्तरप्रान्तीय मार्गदर्शन दिया है। डा० दयानिधि पटनायक ने उत्तर प्रदेश, राजस्थान, संयुक्त पंजाब और मध्य-प्रदेश में, सुश्री निर्मला देशपांडे ने तमिलनाडु, महाराष्ट्र, उत्तरप्रदेश और मध्यप्रदेश में, श्री गोविन्दराव देशपांडे ने महाराष्ट्र, मध्य-प्रदेश, हिमाञ्चल प्रदेश और बिहार में, श्री ठाकुरदास बंग ने महाराष्ट्र, गुजरात और बिहार में, श्री चारुचन्द्र भण्डारी ने गुजरात तथा श्री सिद्धराजजी ने बिहार में वहाँ के आन्दोलन को वेग देने की दृष्टि से दौरे किये। श्री राममूर्तिजी ने उत्तरप्रदेश और बिहार के विभिन्न शिविर-सम्मेलनों में मार्गदर्शन किया। श्री शंकररावजी का उड़ीसा और तमिलनाडु में विशेष दौरा हुआ। दादा धर्माधिकारी का महाराष्ट्र, उड़ीसा और मध्यप्रदेश में मार्ग-दर्शन मिला। श्री जयप्रकाश नारायण और मनमोहन चौधरी के देशभर में दौरे हुए।

सेवाग्राम गांधी-शताब्दी-सम्मेलन में ग्रामदान के लिए सम्मति

२७ जुलाई से २९ जुलाई, '६८ तक सेवाग्राम में सारे हिन्दुस्तान के सभी प्रदेशों के गांधी-शताब्दी समिति के अध्यक्ष और मंत्रीगण तथा राष्ट्रीय शताब्दी समिति के सदस्यों को लेकर शताब्दी-वर्ष के कार्यक्रम के सम्बन्ध में तीन दिवसीय एक सम्मेलन हुआ। गांधी-शताब्दी के दौरान कार्यान्वित करने के लिए राष्ट्रीय स्तर पर एक नौसूत्री न्यूनतम कार्यक्रम स्वीकार किया गया और इस कार्यक्रम के अन्तर्गत ग्रामदान को सम्मति प्राप्त हुई।

इस संदर्भ में गांधी-शताब्दी की रचनात्मक कार्यक्रम उप-समिति का काम भी विशेष उल्लेखनीय है। इस वर्ष समिति की ओर से अन्तरप्रांतीय शिविर, प्रदर्शनी, फिल्म और फोटो-प्रदर्शनी आदि का आयोजन हुआ, जिसमें त्रिविध कार्यक्रम और खास करके ग्रामदान के काम को मदद मिली है। शिविरों में कार्यकर्ताओं को काफी मार्गदर्शन मिला है।

राजनैतिक दलों का समर्थन

प्रदेशों के विभिन्न राजनैतिक दलों से सम्पर्क किया गया है और ग्रामदान, प्रदेशदान के लिए उनका समर्थन प्राप्त हुआ है। बिहार, मध्यप्रदेश और राजस्थान में यह प्रयास विशेष उल्लेखनीय है। इन प्रदेशों में ग्रामदान के समर्थन में अपील भी यहाँ विभिन्न दलों के नेताओं तथा प्रमुख नागरिकों के हस्ताक्षरों से जारी की गयी है!

आर्थिक संयोजन

आन्दोलन के आर्थिक संयोजन के सम्बन्ध में विभिन्न प्रदेशों में कुछ विशेष तरीके अपनाये गये हैं। प्रदेशदान के संकल्प की ओर बढ़ते हुए रचनात्मक कार्यकर्ताओं की सहायता पहले की अपेक्षा ज्यादा दिखने लगी है। रचनात्मक संस्थाओं की ओर से नकद तथा कार्यकर्ताओं के रूप में सहायता भी बहुत बड़ी मात्रा में मिली है। बिहार खादी-ग्रामोद्योग संघ, श्री गांधी आश्रम, तमिलनाडु सर्वोदय संघ, पंजाब खादी-ग्रामोद्योग संघ आदि संस्थाओं के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं, जिनकी ओर से आन्दोलन में कार्यकर्ता तथा अर्थ के रूप में बड़े परिमाण में सहायता मिली है या एक प्रकार से यों कहा जा सकता है कि आन्दोलन इन प्रदेशों में मुख्यतः इन संस्थाओं की सहायता से ही चला है।

महाराष्ट्र में पंचायतराज-संस्थाओं, सहकारी समितियों और आदाताओं से सहायता मिली है। गुजरात में कार्यकर्ताओं के मानधन तथा आन्दोलन-खर्च के लिए एकमुश्त सहायता मिलने लगी है। राजस्थान से सर्वोदय-मित्र के रूप में बड़ी तादाद में आर्थिक सहायता मिली है। यहाँ कार्यकर्ताओं ने अपनी ओर से भी आन्दोलन में आर्थिक योग दिया है। मुजफ्फरपुर (बिहार) में स्थानीय सहायता की दृष्टि से एक-एक रुपये के कूपन छपवाये गये, जिससे स्थानीय सहायता बड़ी मात्रा में मिली। उत्तरप्रदेश, उड़ीसा आदि प्रदेशों में अभियान के लिए स्थानीय सहायता मिली है। लेकिन कुल मिलाकर यह आर्थिक व्यवस्था बहुत ही अपर्याप्त है और आवश्यक मात्रा तक हम नहीं पहुँचे हैं।

जन-आन्दोलन के रूप में आन्दोलन को केवल व्यापक करना ही नहीं है, यह संगठन भी जनता का अपना संगठन बने, उस संगठन के जरिये वहाँ आन्दोलन हो तथा आर्थिक, सामाजिक व पुनर्रचना का कार्यक्रम वे उठायें।

भूदान-यज्ञ-बोर्डों का पुनर्गठन

इस वर्ष राजस्थान और पंजाब भूदान-यज्ञ-बोर्डों का पुनर्गठन किया गया है। मध्य-प्रदेश में नये भूदान-कानून के अन्तर्गत भूदान-बोर्ड का गठन किया गया है। ०

राज्यदान के लिए संकल्पित प्रदेश

(३१ मार्च '६९ तक)

बिहार, तमिलनाडु, उड़ीसा, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, राजस्थान।

कानूनी घोषित ग्रामदान

१. उड़ीसा ८७०
२. असम १६७ (ग्रामसभाएँ स्थापित १३२)
३. राजस्थान १४५ (ग्रामसभाएँ स्थापित १४१)
४. बिहार १२४
५. तमिलनाडु ५९ (राजपत्रित १३)
६. महाराष्ट्र १
७. आंध्र १

www.vinoba.in

संथाल परगना में तीन दिन

भागलपुर जिले से पटना जाना तय था, परन्तु बाँका से जसीडीह, मधुपुर (संथाल परगना) से ट्रेन द्वारा जाने में सुविधा थी। अचानक संथाल परगना को तीन दिन मिल गये। बाबा आ रहे हैं, यह सूचना पाते ही मोतीलालजी की क्रान्ति-प्रेरणा पुनः जाग गयी। सबको निमंत्रण भेजे गये। श्री लखी भाई भागलपुर आये। दो दिन देवघर और एक दिन मधुपुर के कार्यक्रम तय करके गये।

२६ मार्च की शाम को देवघर डाकबंगले में जिला-उपायुक्त श्री रामचन्द्र सिन्हा, अपर समाहर्ता श्री देवशरण सिंह, आरक्षी अधीक्षक तथा अन्य मुख्य अधिकारी, जनसेवक, तथा सार्वजनिक कार्यकर्ताओं के साथ श्री मोती बाबू ने बाबा का स्वागत किया। बाबा ने परिचय होने के बाद प्रथम यही माँग की— "संथाल परगना सन्तों का जिला है। जिलादान कब तक पूरा होगा ?" उत्साह भरे स्वर में उपायुक्त महोदय बोले—"बाबा, यह कार्य अवश्य जल्दी पूरा होगा। जब अन्य जिलों में हुआ है तो यहाँ क्यों नहीं होगा ?" फिर यह बताने पर—कि सारण और चम्पारण में सबके सम्मिलित प्रयास से एक निश्चित अवधि में जिलादान पूरे हो गये, वैसा प्रयास संयोजनपूर्वक यहाँ हो तो दो सप्ताह में जिलादान अवश्य हो सकता है— उपायुक्त ने तदनुसार योजना बनाकर काम करने का बाबा को आश्वासन दिया।

२७ मार्च को ११ बजे मैत्रा हाईस्कूल में सभा हुई। उसमें जिले के अधिकारी, सरकारी सेवक, पंचायत के अध्यक्ष, शिक्षक-संघ के मंत्री, पहाड़िया सेवा मण्डल, खादी-ग्रामोद्योग समिति आदि के कार्यकर्ता और प्रतिष्ठित नागरिक पहुँचे। प्रारम्भ में जिलादान की व्यूह-रचना के बारे में जानकारी दी गयी। रामनवमी और मुहर्रम, दोनों त्योहारों में कहीं शान्ति-भंग न हो, इसके लिए सरकारी अधिकारी चिन्तित थे। शान्ति-सुरक्षा के जाप्ते में लगे थे। यह जानकर बाबा उसके बारे में ही बोले—"पुलिस की शान्ति कायम करने की शक्ति तभी बनेगी जब वह निःशस्त्र होकर जनता के बीच जायगी और राम रहीम की एकता और नसीहत समझायगी।" बाबा ने रचनात्मक सेवा-कार्य में लगे कार्यकर्ताओं को याद दिलाया कि वे सब अलिखित शान्ति-सैनिक हैं, उन्हें अशान्ति के मौकों पर जनता के बीच कूदने आना चाहिए। सभा के बाद सरकारी और गैरसरकारी प्रमुख लोग एक साथ बैठे, जिलादान के संयोजन-सम्बन्धी चर्चा हुई। तय हुआ कि ता० ६ अप्रैल को जिला-स्तर पर दुमका में एक प्रशिक्षण-शिविर (गोष्ठी) हो। हर प्रखण्ड से विकासपदाधिकारी, अंचलाधिकारी, शिक्षा-प्रसार अधिकारी तथा शिक्षकों, पंचायतों तथा सार्वजनिक संस्थाओं के प्रमुखों को बुलाया जाय। उन्हें जिलादान का विचार, व्यवहार और व्यूह-रचना समझायी जाय। जरूरत का साहित्य, प्रचार-पत्र और ग्रामदान-फार्म उन्हें मुहैया किये जायँ, और ता० १० से २५ अप्रैल तक हर प्रखण्ड में प्राप्ति का अभियान चलाया जाय। २५ अप्रैल तक जिलादान पूरा करना है, यह सूचना गम्भीरतापूर्वक उपायुक्त तथा अन्य मित्रों ने दी।

शाम को देवघर कालेज के प्राचार्य तथा कुछ आचार्य आये। बुनियादी तालीम असफल होने की शिकायत की। विनोबाजी ने कहा—"मेरी शिक्षकों से एक प्रार्थना है, वे अपने जीवन में श्रमनिष्ठा लायें, और इसके लिए हर रोज २ घण्टे कोई उत्पादक श्रम करें। खेत खोदने का भी काम हो सकता है। बाबा ने वह काम खुद किया है। बाबा का इस बारे में शोध भी है कि लोग कुदाली एक ही ढंग से पकड़ते हैं। बाबा बारी-बारी बायें और दायें बदलकर खोदता था, जिससे दोनों हाथों पर काम का बोझ बराबर-बराबर आये। जिन्हें नया अभ्यास करना है तो खोदने का काम ५ मिनट से शुरू करें और १ मिनट का समय प्रति सप्ताह बढ़ाते जायें।"

२८ मार्च को सुबह ८ बजे बाबा श्री महावीर प्रसाद पोद्दार द्वारा संचालित प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र, जसीडीह गये। बाबा ने कहा—"मैं इस चिकित्सा को सत्व-चिकित्सा कहता हूँ। इसमें श्रद्धा ही मुख्य आधार है।" बाबा ने यह भी बताया कि, "चरक-संहिता में यह लिखा है कि 'अगर रोग असाध्य है यह दीखे तो नाहक दवा न लें, उपचार न करें, पानी सेवन करें, और विष्णुसहस्रनाम का पाठ करें।' यह चरक मुनि की विशेषता है कि विशेष रोग के लिए विष्णुसहस्रनाम बताया। विष्णुसहस्रनाम आखिर में बचायेगा तो पहले ही क्या न बचायेगा ? सत्व-चिकित्सा मानती है कि उसके पास हर रोग के लिए उपचार है, हर रोगी के लिए नहीं। रोगी अगर भगवान के पास पहुँचने की तैयारी करता है तो हम बीच में क्यों आयें ? मरने के समय चित्त शान्त रहे, भगवान का स्मरण हो, इससे बेहतर चीज क्या हो सकती है ?" अन्त में पोद्दारजी ने बाबा को लिखकर दिया कि "भूदानी (ग्रामदानी) गाँवों के सौ-दो-सौ अच्छे कार्यकर्ताओं को २५-२५ के दल में प्राकृतिक चिकित्सा की शिक्षा के लिए यहाँ भिजवा सकते हैं। ३-३ महीने में कुछ सीख सकेंगे। यदि परिश्रमी हों तो यहाँ श्रम से उनका आधा खुराक-खर्च निकल सकेगा। इस महान कार्य में यह साधारण सहयोग समझा जा सकता है।"

भागलपुर में कैथोलिक चर्च के विशप श्री सुजन स्वामी (युरबन मँगरी) का परिचय हुआ था। अपने वादे के अनुसार वह संथाल परगना के अपने सहायक फादर श्री यलोसियस के साथ देवघर पड़ाव पर मिलने पहुँचे। जिलादान-अभियान की योजना समझी। ग्रामदान-अपील पर हस्ताक्षर किये। ग्रामदान-प्राप्ति में भाग लेने के लिए कार्यक्रम बनाया और महसूस किया कि ग्रामदान याने 'लव दाई नेबर ऐज दाईसेल्फ' (पड़ोसी को अपना-सा प्यार करो) फादर यलोसियस केरल-निवासी हैं। केरल में विनोबाजी को भूदान-यात्रा में देखा था और उनके स्वागत में मलयाली कविता भी सुनायी थी। वे गत ५ साल से पोड़ैया हाट में स्कूल के मंत्री हैं। उन्होंने अपने क्षेत्र में ग्रामदान कार्य में लगने का आश्वासन दिया इसके लिए विशप की एक अपील भी अलग से निकालना तय किया।

आज की सभा में बाबा ने शिक्षकों को प्रमुखतया आचार्यकुल की आवश्यकता और महत्ता समझायी। और सहज ही पशु के-->

www.vinoba.in

राजस्थान

० राष्ट्रीय गांधी-जन्म-शताब्दी रचनात्मक समिति एवं राजस्थान ग्रामदान-अभियान-समिति के सहयोग से नागौर जिले के मकराना प्रखण्ड में २० ग्रामदान प्राप्त हुए। चार दिवसीय इस अभियान में प्रखण्ड के लगभग १०० गांवों में से ४० गांवों में टोलियां गयी थीं।

० मकराना में ही २६ से २८ मार्च तक राजस्थान, पंजाब, हरियाणा और दिल्ली प्रदेशों के जिला शांति-सेना-संयोजकों व प्रमुख शांति-सैनिकों का एक क्षेत्रीय शिविर श्री सिद्धराज ढड्ढा के कुलपतित्व में चला। शिविर में ३५ शांति-सैनिकों ने भाग लिया। शिविर-काल में मकराना नगर के शिक्षकों, विद्यार्थियों की गोष्ठियां और सार्वजनिक सभाओं का आयोजन किया गया, जिनमें ग्राम-परिवार से लेकर राष्ट्रीय समस्याओं तक के विभिन्न पहलुओं पर सर्वोदय की दृष्टि से प्रकाश डाला गया।

२ अप्रैल को मकराना से राजस्थान प्रदेश ग्रामदान-अभियान-समिति के संचालक श्री गोकुल भाई भट्ट की अध्यक्षता में अभियान समाप्ति-समारोह किया गया। उन्होंने उपस्थित शांति-सैनिकों तथा नागरिकों को आज की जागतिक परिस्थिति में ग्रामदान से ग्रामस्वराज्य विचार को अपनाने का आवाहन किया।

→उपदेशों की चर्चा करते हुए बोले—"क्या सामने बैठे हुए सुजनस्वामी युद्ध में घायल सिपाहियों की सेवा-शुश्रूषा करने में ख्रीस्तधर्म का सही पालन मानेंगे या समाज में से युद्ध ही समाप्त हो ऐसी अहिंसक समाज-रचना के काम में?"

ता० २९ मार्च को मधुपुर में प्रखण्डदान समर्पण हुआ। बाबा आ रहे हैं, इससे प्रेरणा पाकर प्रखण्ड विकास पदाधिकारी और खादी-समिति के थोड़े-से कार्यकर्ता जुट गये थे और ८-१० दिन में ही यह प्रखण्डदान पूरा कर डाला।

रात ९ बजे तूफान से पटना सिटी स्टेशन पहुँचे [ㆍ

✻ गांधी-शताब्दी कैसे मनायें ? ✻

★ आर्थिक व राजनैतिक सत्ता के विकेन्द्रीकरण और ग्राम-स्वराज्य की स्थापना के लिए ग्रामदान-आन्दोलन में योग दें।

★ देश को स्वावलम्बी बनाने और सबको रोजगार देने के लिए खादी, ग्राम और कुटीर उद्योगों को प्रोत्साहन दें।

★ सभी सम्प्रदायों, वर्गों, भाषावार समूहों में सौहार्द-स्थापना तथा राष्ट्रीय एकता व सुदृढ़ता के लिए शांति-सेना को सशक्त करें।

★ शिविर, विचार-गोष्ठी, पदयात्रा वगैरह में भाग लेकर गांधीजी के संदेश का चिंतन-मनन और प्रसार करें, उसे जीवन में उतारें।

गांधी रचनात्मक कार्यक्रम उपसमिति (राष्ट्रीय गांधी-जन्म-शताब्दी-समिति), टुंकलिया भवन, कुन्दीगरों का भैरू, जयपुर-१ राजस्थान द्वारा प्रसारित।

भूदान-यज्ञ २८-४-'६९ रजिस्टर्ड नम्बर एल. ११७ [पहले से डाक-व्यय दिये बिना भेजने की स्वीकृति प्राप्त] लाइसेन्स नम्बर ए ३४
www.vinoba.in

डा० सुशीला नायर का अनशन समाप्त

लखनऊ—२३-४-'६९। प्राप्त सूचना के अनुसार अखिल भारत नशाबन्दी परिषद की अध्यक्षा डा० सुशीला नायर ने गढ़वाल की शराब की दुकानें बन्द कराने के सम्बन्ध में चल रहे अपने अनशन को संध्या समय समाप्त किया। उपवास की समाप्ति पर डा० सुशीला नायर ने वक्तव्य दिया कि श्री गुप्त के इस आश्वासन पर, कि वे गढ़वाल की तीन शराब की दुकानें बन्द करने के बारे में मेरी तीव्र भावनाओं को समझ गये हैं और इस मामले में वे उचित कदम उठायेंगे, मैंने अनशन समाप्त करने का निश्चय किया है। मैं उन सभी शुभचिन्तकों और सहानुभूति रखनेवालों को धन्यवाद देती हूँ जिन्होंने सामान्य व्यक्ति के हित में नशाबन्दी का समर्थन किया है। मैं श्री गुप्त को भी उनके उदारता भरे रवैये के लिए उन्हें धन्यवाद देती हूँ।

डा० सुशीला नायर का अनिश्चित काल का अनशन पिछले ७ दिनों से जारी था। यह अनशन उन्होंने लैंसडोन में १६ अप्रैल को प्रारम्भ किया था जब कि स्थानीय जनता की इस माँग और समर्थन के बावजूद कि शराब की बन्द दुकानें फिर से न खुलवायी जायें, स्थानीय अधिकारियों ने पुलिस की सहायता से दुकानें खुलवा दी थीं। डा० सुशीला नायर उ०प्र० के मुख्य मंत्री श्री चन्द्रभान गुप्त से समझौता-वार्ता के लिए लखनऊ आयी हुई थीं। २१ अप्रैल को वार्ता सफल न होने पर लखनऊ की रचनात्मक कार्य करनेवाली महिलाओं का प्रतिनिधि मण्डल श्री गुप्त से मिला। २३ अप्रैल को डा० सुशीला नायर के बड़े भाई और गांधीजी के भूतपूर्व निजी मंत्री श्री प्यारेलालजी भी दिल्ली से लखनऊ आये थे। अनेक लोगों के समवेत प्रयास के फलस्वरूप श्री गुप्त ने गढ़वाल की शराब की दुकानें बन्द कराने का आश्वासन दिया।

सर्व सेवा संघ के अध्यक्ष : एस० जगन्नाथन्

एस. जगन्नाथन् : जन-नेतृत्व

दक्षिण भारत के प्रमुख तीर्थस्थान तिरुपति (आन्ध्र प्रदेश) में २३ से २५ अप्रैल तक हुए सर्व सेवा संघ के वार्षिक अधिवेशन में ५५ वर्षीय श्री शंकरलिंगम् जगन्नाथन् सर्व सम्मति से आगामी तीन वर्षों के लिए संघ के अध्यक्ष निर्वाचित हुए।

श्री एस० जगन्नाथन् सर्वोदय-जगत् में जाने-माने उच्च कोटि के व्यक्ति हैं। उनके ही अथक परिश्रम और मूक सेवा का परिणाम है कि दक्षिण भारत में एकमात्र प्रदेश तमिलनाडु में ग्रामदान-आन्दोलन का गहरा और व्यापक प्रसार हुआ है तथा तमिलनाडु आज राज्यदान के करीब पहुँच चुका है। उन्होंने तमिलनाडु में जन-शक्ति खड़ी की है और उसी के माध्यम से वे जनक्रान्ति की ओर अग्रसर हो रहे हैं।

नशाबन्दी सम्मेलन

भरतपुर : वीर भूमि राजस्थान के पूर्वी सिंहद्वार ऐतिहासिक नगर भरतपुर में सम्पन्न पंचम अखिल भारत नशाबन्दी सम्मेलन ने घोषित किया है कि अब समय आ गया है कि जब शराब की दुकानों तथा शराब-निर्माणशालाओं और गोदामों आदि को बन्द कराने के लिए सुनिश्चित क्रियात्मक कार्यक्रम अपनाया जाय।

सम्मेलन में दिल्ली में ९–१० मार्च को आयोजित सर्वदलीय राष्ट्रीय नशाबन्दी सम्मेलन के निर्णयों का अनुमोदन करते हुए विभिन्न राज्य सरकारों तथा केन्द्र सरकार से माँग की है कि वे आगामी १५ अगस्त तक अपने इस निश्चय की घोषणा करें कि वे निश्चित अवधि में मद्यनिषेध की नीति को कार्यान्वित करने का विचार रखती हैं और वे महात्मा गांधी के आगामी जन्म दिवस २ अक्तूबर से अपनी इस नीति को कार्यान्वित करने के लिए क्रमबद्ध कार्यक्रम अपनायेंगी कि जिससे शीघ्रातिशीघ्र नशाबन्दी की नीति को पूर्णरूप से कार्यान्वित करना सम्भव हो सके।

सम्मेलन ने सिफारिश की है कि यदि सरकारें उपर्युक्त घोषणा १५ अगस्त तक न करें, तो फिर शराब की दुकानों तथा शराब-निर्माणशालाओं इत्यादि को बन्द कराने के लिए शांतिमय सत्याग्रह विनोबा जन्म दिवस ११ सितम्बर से कर दिया जाय। सम्मेलन ने सभी राजनैतिक, सामाजिक, रचनात्मक तथा धार्मिक संस्थाओं को आवाहन किया है कि वे राष्ट्रीय नवनिर्माण के इस कार्य में अपना सक्रिय सहयोग प्रदान करें।

बिहार

शाहाबाद (बिहार) से श्री बैजनाथ उपाध्याय लिखते हैं कि नावानगर प्रखण्ड में ग्रामदान-अभियान को गतिवान बनाने के लिए श्री मथुरा प्रसाद सिंह और श्री राधा मोहन राय आये। ग्रामदानोत्तर कार्य के लिए २३ मार्च को जिले के प्रमुख लोगों की बैठक हुई जिसमें भावी योजना बना ली गयी है।

वार्षिक शुल्क : १० रु०; विदेश में २० रु०; या २५ शिलिंग या ३ डालर। एक प्रति : २० पैसे।
श्रीकृष्णदत्त भट्ट द्वारा सर्व सेवा संघ के लिए प्रकाशित एवं इण्डियन प्रेस (प्रा०) लि० वाराणसी में मुद्रित।